Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۣ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا (सूरत अन्निसा आयत :30)

अनुवाद: और जो कुछ आसमानों में है तथा जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है और हर प्रकार की आवश्यक रक्षा करने वाला है। हे लोगो! यदि वह चाहे तो तुम्हे मार दे और फिर दुसिरे लोगो को ले आए तथा अल्लाह ऐसा करने का सामर्थ्य रखता है ।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

वर्ष 5

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

अंक- 51

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फरीद

24 रबीयुल सानी 1441 हिज्री कमरी 17 फतेह 1399 हिज्री शम्सी 17 दिसम्बर 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

केवल डाक्टरों पर या ईलाज पर भरोसा करना बुद्धिमत्ता नहीं। ख़ुदा चाहता है कि दूसरे संसार पर भी ईमान पैदा हो।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

डराने वाली भविष्यवाणियां तौबा और इस्तिग़फ़ार से टल सकती हैं।

ऐसा ही मैं यह भी बता चुका हूँ कि वईद (सचेत करने वाली) की पेशगोइयां तौबा और इस्तिग़फ़ार से टल सकती हैं। यहां तक कि दोज़ख़ का डराना भी टल सकता है। लोग इस तरफ़ रुजू करें और ध्यान दें तो अल्लाह तआला इस देश और क्षेत्र को चाहेगा तो सुरक्षित रख लेगा। वह जो चाहता है करता है। परन्तु फ़रमाता है। قُلۡ مَا يَعۡبَؤُا بِكُمۡ رَبِّيۡ لَوۡلَا دُعَآؤُكُمۡ (अल-फ़ुर्कान: 78) उन लोगों को कह दे कि यदि तुम मेरी बंदगी न करो तो पर्वा क्या है लोग कहते हैं गली-गली में हकीम हैं, डाक्टर मौजूद हैं ,हस्पताल खुले हैं वे शीघ्र इलाज करके अच्छे हो जाऐंगे? परन्तु उनको मालूम नहीं कि ख़ुद मुम्बई और कराची में बड़े बड़े डाक्टर कितने पीड़ित होकर चल बसे हैं? जो इस सेवा पर मामूर हो कर गए थे ख़ुद ही शिकार हो गए। यह ख़ुदा तआला अपने प्रभुत्व को दिखाता है कि केवल डाक्टरों पर या ईलाज पर भरोसा करना बुद्धिमत्ता नहीं। ख़ुदा चाहता है कि दूसरे संसार पर भी ईमान पैदा हो। अब लोग ज़ोर लगा कर दिखाएं जिस तरह इन्सान एक बालिशत भर ज़मीन के लिए मरता है, साज़िशें करता और मुक़द्दमों के बोझ उठाता है क्या वह ख़ुदा तआला के किसी आदेश का पालन न करने पर भी वैसी ही वेदना और दुख अपने अन्दर पाता है? हरगिज़ नहीं। अज्ञान इन्सान जब बहुत बड़ी बीमारी में पीड़ित होता है तो ख़ुदा को पुकारता है परन्तु यूं ही आज़माईशी तौर पर उसे मोहलत मिलती है तो फिर एक ऐसा नियम स्थापित करता है और ऐसी चाल चलता है कि मानो मरना ही नहीं। मामूली बीमारी से मर जाने पर भी बहुत थोड़ा प्रभाव अब दिलों पर होता है। दो तीन दिन तक बुरा नाम मात्र बना रहता है फिर वही हंसी मखौल और हंसी मज़ाक, क़ब्रिस्तान में जाते हैं और मुर्दे गाड़ते हैं परन्तु कभी नहीं सोचते कि आख़िर एक दिन मर कर हम ने भी ख़ुदा के समक्ष जाना है। अब ख़ुदा तआला ने देखा कि मामूली मौतें भी प्रभावी नहीं होती हैं। अमृतसर, लाहौर में साठ सत्तर दैनिक मौतों की संख्या होती होगी। कलकत्ता और बंबई में इससे अधिक मरते हैं। यद्यपि देखने में यह दृश्य ख़ौफ़नाक है परन्तु कौन देखता है। कोताह अंदेश इन्सान कह उठता है कि ये मौतें आबादी के दृष्टि से हैं और परवाह नहीं करता। दूसरों की मौत से ख़ुद कुछ हानि नहीं उठा सकता। इस लिए ख़ुदा तआला ने दूसरा नुस्ख़ा धारण किया है और ताऊन के माध्यम से लोगों को सचेत करना चाहा है परन्तु मैं तुमको नसीहत करता हूँ कि अब जो होना है अत: होना है ऐसा न हो कि यह समझ कर तुम ख़ुदा तआला को भी नाराज़ करो और गर्वनमेंट को भी दोषी ठहराओ। गर्वनमेंट को बदनाम करने से क्या प्राप्त होगा? ताऊन तुम्हारे अपने कर्मों के फलों से आई और गर्वनमेंट पर तुम्हारी बदौलत मुसीबत आई। (मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 233 से 234 प्रकाशन 2008 कादियान)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

जो ख़ुतबा के मध्य मस्जिद आए तो वह हल्की रकातें पढ़ ले

(931)हज़रत जाबिर रज़ि से रिवायत है कि एक व्यक्ति जुम्आ के दिन (मस्जिद में) आया जबकि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुत्बा इरशाद फ़र्मा रहे थे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या तुमने नमाज़ पढ़ी है? उसने कहा नहीं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:(उठो)और दो रकातें पढ़ो।

हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली उल्लाह शाह साहिब रज़ि इस हदीस की व्याख्या में फ़रमाते हैं इमाम मालिक के निकट उचित नहीं कि ख़ुत्बा के मध्य में कोई नफ़ल पढ़े बल्कि ख़ुत्बा सुनने के आदेश पर अमल करना नवाफ़िल पढ़ने पर मुक़द्दम है।

आप रज़ि फ़रमाते हैं: यदि तहय्या मस्जिद (मस्जिद में प्रवेश करने पर दो रकअत नमाज़ पढ़ना) से सम्बंधित ये नफ़ल ऐसे ही होते हैं कि ख़ुत्बे का सुनना उन पर मुक़द्दम है तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुत्बा के मध्य में हज़रत सुलीक गुतफ़ानी रज़ि से क्यों फ़रमाते कि दो नफ़ल पढ़ लें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह इरशाद बताता है कि दोनों हुक्म अपनी अपनी जगह अनुकरण योग्य हैं। उनमें कोई टकराव नहीं। ख़ुत्बा के मध्य में आने वाला उस वक़्त श्रोताओं में से होगा जब वह पहले तहय्या मस्जिद पढ़ने के हुक्म पर अमल कर ले।

(सही बुख़ारी, भाग 2 किताब अल जुमआ)

क़ुरआन-ए-करीम के द्वारा सब दुनिया के साथ जिहाद कर जो सबसे बड़ा जिहाद है अर्थात तब्लीग़ का जिहाद

यदि तेराह सौ साल में भी सारी दुनिया में इस्लाम नहीं फैला तो इस का कारण यह नहीं कि यह तलवार कुंदथी बल्कि उस की बड़ी कारण ये थी कि मुस्लमानों ने इस तलवार से काम लेना छोड़ दिया।

جَاهِدۡهُمۡ بِهٖ جِهَادًا كَبِيۡرًا की तफ़सीर में सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं :

"अल्लाह तआला फ़रमाता है तू उन काफ़िरों की बातें न मान। बल्कि क़ुरआन करीम के द्वारा सब दुनिया के साथ जिहाद कर जो सबसे बड़ा जिहाद है अर्थात तब्लीग़ का जिहाद जिस के क़रीब जाने से भी आजकल के मुस्लमानो का दम घुटता है। वह इस जिहाद से तो इस बहाना से भागता है कि असल जिहाद तलवार का है और तलवार के जिहाद से इस लिए भागता है कि दुश्मन बहुत शक्तिशाली है मौलवी फ़तवा देता है कि हे मुसलमानो ! बढ़ो और लड़ो। और मुस्लमान कहते हैं कि हे मौलवी साहिबान आप आगे बढ़ें और लड़ें क्योंकि आप हमारे लीडर और राहनुमा हैं और फिर दोनों अपने अपने घरों की तरफ़ भागते हैं हालाँकि ख़ुदा ने हमें वह तलवार दी है जिसे कभी ज़ंग नहीं लग सकता और जो किसी लड़ाई में भी नहीं टूट सकती। तेराह सौ साल गुज़र गए और दुनिया की सख़्त से सख़्त क़ौमों ने चाहा कि इस तलवार को तोड़ दें। इसके टुकड़े टुकड़े कर दें और उसे हमेशा के लिए नाकारा बना दें परन्तु यह तलवार उन से न टूट सकी। यह वह क़ुरआन है जो ख़ुदा ने हम को दिया है और यह वह तलवार है जिससे हम सारी दुनिया को फ़तह कर सकते हैं। फ़रमाता है جَاهِدۡهُمۡ بِهٖ جِهَادًا كَبِيۡرًا। तलवार का जिहाद और नफ़्स के साथ जिहाद और दूसरे और जिहाद सब छोटे हैं सिर्फ क़ुरआन का जिहाद

शेष पृष्ठ 10 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान बदरी सहाबा हज़रत अबदुल्लाह बिन अम्र और हज़रत सिमाक बिन ख़रशा अबु दुजाना रज़ि अल्लाहु अन्हु की प्रशंसनीय विशेषताओं का वर्णन।

चार मरहूमीन श्रीमान महबूब ख़ान साहब (शहीद पिशावर पाकिस्तान, श्रीमान फ़ख़र अहमद फ़ख़्र साहिब मुरब्बी सिलसिला पाकिस्तान और उनके बेटे प्रिय एहतशाम अहमद अबदुल्ला और श्रीमान डाक्टर अब्दुल करीम साहिब रिटायर्ड इकनॉमिक एडवाइज़र स्टेट बैंक आफ़ पाकिस्तान का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 13 नवम्बर 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज बदरी सहाबा का वर्णन होगा। सबसे पहले तो मैं एक वर्णन करना चाहता हूँ। दो ख़ुत्बे पहले हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि॰ के बारे में जो वर्णन हुआ था उसमें मस्नद अहमद बिन हनबल की एक रिवायत थी जिस में ताऊन के बारे में कहा गया था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि शीघ्र तुम शाम की ओर हिज्रत करोगे, और वह तुम्हारे हाथों फ़तह हो जाएगा लेकिन वहां फोड़े फुंसियों की एक बीमारी तुम पर मुसल्लत हो जाएगी जो आदमी को सीढ़ी के पाए से पकड़ लेगी। यह अनुवाद में ग़लती थी सही तरह अनुवाद वर्णन नहीं हो सका था, और इससे बात स्पष्ट भी नहीं होती तो इस बारे में सही अनुवाद के साथ जो रिवायत है वह पुनः वर्णन करता हूँ।

इस्माईल बिन उबैदुल्लाह से रिवायत है कि हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि तुम लोग शाम की ओर हिजरत करोगे। वह तुम्हारे लिए फ़तह किया जाएगा। वहां तुम लोगों में एक बीमारी प्रकट होगी जो फोड़े या सख़्त काटने वाली एक चीज़ की तरह होगी। वह इन्सान की नाभि के निचले हिस्से में प्रकट होगी। अब जो यह है कि सीढ़ी के पाए से पकड़ेगी यह अनुवाद जो अलग अलग शब्दों का होता है पहले ग़लत किया गया था। असल अनुवाद यह है कि वह इन्सान की नाभि के निचले हिस्सा में प्रकट होगी। जिस तरह नाभि के निचले हिस्से में टांग के ऊपर और मध्य शरीर के एक फोड़ा निकलता है। फ़रमाया कि इसके द्वारा अल्लाह तआला लोगों को शहादत प्रदान करेगा और इसके द्वारा उनके कर्मों को पवित्र करेगा। फिर हज़रत मआज़ रज़ि॰ ने दुआ की कि हे अल्लाह यदि तू जानता है कि मआज़ बिन जबल ने यह बात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुनी है तो उसे और उसके घर वालों को इस से प्रचुर हिस्सा दे। इस पर उन सबको ताऊन हो गई यहाँ तक कि उनमें एक भी नहीं बचा। आप रज़ि॰ की शहादत की उंगली पर ताऊन का दाना निकला तो आप रज़ि॰ ने कहा कि मैं कदापि ख़ुश नहीं हूँगा कि मुझे इसके बदले लाल ऊंट मिलें।

(मस्नद इमाम अहमद बिन हंबल, भाग 7 पृष्ठ 371मस्नद मआज़ बिन जबल, हदीस 22439 आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

तो यह दुरुस्ती थी। अनुवाद जो प्रिंट हो रहा है और अलफ़ज़ल में भी छपता है इसमें तो ठीक कर दिया गया है। मैंने कहा कि आपके सामने भी प्रस्तुत कर दूं।

इसके बाद अब जो वर्णन चल रहा था वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र का था। अब वही वर्णन पुनः शुरू होता है। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि वर्णन करते हैं कि जंग उहद के दिन मेरे पिता को नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास इस हाल में लाया गया कि आप रज़ि॰ का मुसला किया गया था अर्थात शरीर के अंग काट दिए गए थे विशेषता कान और नाक। आप की लाश रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने रखी गई तो कहते हैं कि मैं उनके चेहरे से कपड़ा उठाने लगा तो लोगों ने मुझे मना किया। फिर लोगों ने एक औरत की चीख़ने की आवाज़ सुनी तो किसी ने कहा कि वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र की बेटी हैं। उनका नाम हज़रत फ़ातिमा बिंत अम्र था या यह भी कहा जाता है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र की बहन थीं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मत रो क्योंकि फ़रिश्ते निरंतर इस पर अपने परों से साया किए हैं।

(अलइस्तिआब फ़ी मअरफतिस्सहाबा, भाग 3 पृष्ठ 954-955, अब्दुल्लाह बिन अम्र, दारुल जैल बेरूत 1992 ई)

एक और रिवायत में है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि॰ वर्णन करते हैं कि मेरे पिता को जब उहद के दिन लाया गया तो मेरी फूफी उन पर रोने लगी तो मैं भी रोने लगा। लोग मुझे मना करने लगे परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे मना नहीं फ़रमाया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम लोग इस पर रोया न करो, अल्लाह की क़सम! फ़रिश्ते इस पर निरंतर अपने परों से साया किए हुए थे यहां तक कि तुमने उसे दफ़न कर दिया।

(अलइस्तिआब फ़ी मअरफतिस्सहाबा, भाग 3 पृष्ठ 956, अब्दुल्लाह बिन अम्र, दारुल जलील बेरूत 1992-ई)

जंग उहद के शहीदों की नमाज़ जनाज़ा के बारे में विभिन्न बातें हैं। काफ़ी मतभेद पाए जाते हैं। सही बुख़ारी की रिवायत में हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह वर्णन करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जंगे उहद के शहीदों में से दो दो आदमीयों को एक ही कपड़े में एक साथ रखते और फिर पूछते कि उनमें से कौन क़ुरआन ज़्यादा जानने वाला था। जब उनमें से किसी एक की ओर संकेत किया जाता तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस को कब्र में पहले रखते अर्थात क़ब्र में पहले उतारते फ़रमाते : मैं क़यामत के दिन उन लोगों का गवाह हूं और उनको उनके ख़ूनों में ही दफ़न करने का आदेश देते। न उनको नहलाया गया और न ही उनकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ी गई।

(सही बुख़ारी, किताब अलजनायज़, विषय सूची अस्सलात अल्ल शहीद, हदीस नंबर1343)

सही बुख़ारी की एक दूसरी रिवायत (यह भी बुख़ारी की रिवायत है जो मैंने पढ़ी थी) मैं हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ि॰ वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक दिन तशरीफ़ लाए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग उहद के शहीदों का जनाज़ा पढ़ा। बुख़ारी की एक दूसरी रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उहद के शहीदों का जनाज़ा जंगे उहद के आठ वर्ष बाद पढ़ा।

(सही बुख़ारी ,किताब अलजनायज़ ,विषय सूची अलसलात अल्ल शहीद , नंबर 1344) (सही बुख़ारी, किताबुल अलमग़ाज़ी, विषय सूची ग़ज़वतुल अलउहद, हदीस नंबर 4042)

सुंन इब्ने माजा में वर्णन है कि हज़रत इब्ने अबास रज़ि॰ वर्णन करते हैं कि जंग उहद के शहीदों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में लाया जाता और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दस-दस शहीदों का जनाज़ा पढ़ते और हज़रत हम्ज़ा रज़ि॰ की मय्यत आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ही मौजूद रही यहां तक कि जबकि बाक़ी शहीदों को ले जाया जाता।

(सुंन इब्ने माजा ,किताब अलजनायज़ ,विषय सूची माजाआ-फ़ी स्सालत अलल शुहदाए व-दफ़नोहुम, हदीस नंबर1513)

सुंन अबु दाऊद में वर्णन है कि हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि॰ वर्णन करते हैं कि जंगे उहद के शहीदों को नहलाया नहीं गया और उनको उनके ख़ून अर्थात घाव के साथ दफ़ना दिया गया और उनमें से किसी की भी नमाज़ जनाज़ा नहीं अदा की गई।

(सुंन अबु दाऊद, किताब अलजनायज़, विषय सूची फ़ी अलशहीद युग़ासिलो, हदीस नंबर 3135)

सुंन अबु दाऊद ही की एक रिवायत में है कि हज़रत अनस वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हम्ज़ा रज़ि के अतिरिक्त और किसी शहीद का जनाज़ा नहीं पढ़ा।

(सुंन अबु दाऊद, किताब अलजनायज़, विषय सूची फ़ी अलशहीद युग़सिलो, हदीस नंबर 3137)

सुंन तिर्मज़ी की रिवायत में हज़रत अनस बिन मालक रज़ि॰ वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंगे उहद के शहीदों का जनाज़ा नहीं पढ़ा।

(सुंन तिर्मिज़ी, अबवाब अलजनायज़, विषय सूची माजाआ-फ़ी क़तला उहदो-ज़िकर हमज़, हदीस नंबर 1016)

सीरत इब्ने हश्शाम और जीवनी हलबिया में लिखा है कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उहद के शहीदों का जनाज़ा इस तरह अदा किया कि सबसे पहले हज़रत हम्ज़ा रज़ि॰ की नमाज़ जनाज़ा अदा की। आप स॰अ॰व॰ ने नमाज़ जनाज़ा में सात तकबीरात कहीं। सीरत हलबिया के अनुसार चार तक्बीरें कहीं। इसके बाद बाक़ी शहीदों को एक-एक कर के लाया जाता और हज़रत हम्ज़ा रज़ि॰ की मय्यत के साथ रखा जाता और आप स॰अ॰व॰ इन दोनों की नमाज़ जनाज़ा अदा फ़रमाते और इस तरह समस्त शहीदों की नमाज़ जनाज़ा एक बार और हज़रत हम्ज़ा रज़ि॰ की नमाज़ जनाज़ा 72 बार और कुछ के निकट 92 बार पढ़ी गई।

(जीवनी इब्ने हश्शाम, पृष्ठ 395-396 जंग उहद, दार इब्ने हज़म बेरूत2009ई) (अस्सीरतुल हलबिया,भाग 2 पृष्ठ 337 विषय सूची ज़िक्रे मुग़ाज़िया, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत, 2002 ई)

जीवनी की एक किताब दलायेलुल अन्बुव: में लिखा है कि हज़रत हम्ज़ा रज़ि॰ की मय्यत के पास 9 शहीदों को एक साथ लाया जाता और उनकी नमाज़ जनाज़ा अदा की जाती। फिर इन 9 को ले जाया जाता और और 9 शहीदों को लाया जाता और इस तरह उन समस्त शहीदों की नमाज़ जनाज़ा अदा की गई और आप स॰अ॰व॰ ने हर बार नमाज़ जनाज़ा में सात तकबीरात कहीं। (दलायलुन्नबविय्या, भाग 3 पृष्ठ 287 इजादुल-हर्ब-वामा ज़हरा मिनल आसारे फ़ी हाल अलशुहदा-ए, दारुल क़ुतुब अल्इलमिया बेरूत,2002ई)

सीरत हलबिया और दलायलुल नबिय्या में जंग उहद के शहीदों की नमाज़ जनाज़ा की हदीसों के बारे में बेहस की गई है और इन दोनों पुस्तकों में हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि॰ की रिवायत कि "नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंगे उहद के शहीदों को उनके ख़ूनों के साथ ही दफ़न करने का आदेश दिया, न उनको नहलाया गया और न ही उनकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ी गई" को ज़्यादा मज़बूत ठहराया दिया है।

(अस्सीरतुल हल्बिया, भाग 2 पृष्ठ 338 विषय सूची ज़िक्रे मुग़ाज़िया, दारुल क़ुतुब अल्इलमिया बेरूत, 2002ई) (दलायलुल नबिय्या ,भाग 3 पृष्ठ 287-288 इजाद अल-हर्ब-वा-मा जुहर मिनलआसरे फी हाल अलशुहदा, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत,2002ई) (सही बुख़ारी, किताब अलजनायज़ ,विषय सूची अस्सलात अल अश्शहीद, हदीस नम्बर 1343)

हज़रत इमाम शाफ़ी रह्महुल्लाह वर्णन करते हैं कि निरन्तर रिवायतों से यह बात पक्की ज्ञात होती है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंगे उहद के शहीदों का जनाज़ा नहीं पढ़ा और जिन रिवायतों में वर्णन आया है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन शहीदों का जनाज़ा पढ़ा था और हज़रत हम्ज़ा रज़ि पर सत्तर तकबीरात कही थीं यह बात सही नहीं है और जहां तक हज़रत उक़बा बिन आमिर की रिवायत का संबंध है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आठ वर्ष के बाद इन शहीदों का जनाज़ा पढ़ा तो इस रिवायत में इस बात का वर्णन हुआ है कि यह आठ वर्ष के बाद की घटना है।

(फ़तह अलबारी शरह सही बुख़ारी अज़ अल्लामा इब्ने हिज्र भाग 3 पृष्ठ 249 प्रकाशित दारुल अर्यान लिलतुरास् काहिरा 1986ई)

जैसा कि मैंने कहा इस पर बड़ी बहसें हुई हैं। कुछ और भी वर्णन कर देता हूँ

इमाम बुख़ारी ने अपनी किताब में विषय सूची अस्सलातो अललशहीद अर्थात शहीदों की नमाज़ जनाज़ा के शीर्षक से विषय सूची बाँधी है और इसके नीचे केवल दो हदीसें लाएं हैं। पहली हदीस जो कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है और इस में स्पष्ट तौर पर वर्णन है कि जंग उहद के शहीदों को न नहलाया गया और न ही उन पर नमाज़ जनाज़ा पढ़ी गई जबकि दूसरी हदीस में हज़रत उक़बा बिन आमिर से रिवायत है जिसमें वह वर्णन करते हैं कि

أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ يَوْمًا فَصَلَّى عَلَى أَهْلِ أُحُدٍ صَلَاتَهُ عَلَى الْمَيِّتِ۔

एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम निकले और उहद के शहीदों पर नमाज़ जनाज़ा के तरीका पर नमाज़ पढ़ी और यही हदीस बुख़ारी में ही दूसरी जगह जंगे उहद की विषय सूची में भी आई है वहां यही सहाबी रिवायत करते हैं और वर्णन करते हैं कि

صَلَّى رَسُوْلُ اللّٰهِ عَلَى قَتْلَى أُحُدٍ بَعْدَ ثَمَانِيَ سِنِيْنَ كَالْمُوَدِّعِ لِلْأَحْيَاءِ وَالْأَمْوَاتِ۔

कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उहद के शहीदों पर आठ वर्ष बाद इस तरह नमाज़ पढ़ी जैसे ज़िंदों या वफ़ात पाने वालों को अल-विदा कहा जाता है। (सही अलबुख़ारी, किताब अलजनायज़, विषय सूची अस्सलात अलल शहीद हदीस 1343-1344) (सही अल्बूख़ारी, किताब अलमग़ाज़ी, विषय सूची जंग उहद, हदीस 4042)

इसी तरह अल्लामा इब्ने हिज्र असकलानी रह्महुल्लाह फरमाते हैं कि इमाम शाफ़ी रह्महुल्लाह का इस से यह अर्थ है कि किसी की वफ़ात पर अधिक समय गुज़र जाने के बाद उसकी क़ब्र पर जनाज़ा नहीं पढ़ा जाता। इमाम शाफ़ी रह्महुल्लाह के निकट जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मालूम हुआ कि आप स॰अ॰व॰ के विसाल का समय क़रीब है तो आप स॰अ॰व॰ ने इन शहीदों की क़ब्रों पर जा कर उन्हें अल-विदा कहते हुए उनके लिए दुआ फ़रमाई और उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ की।

(फ़तह अलबारी शरह सही बुख़ारी अज़ अल्लामा इब्ने हिज्र अस्कलानी, भाग 3 पृष्ठ 249 दारे अर्यान लिल्तुर्रास काहिरा1986-ई)

उहद के शहीदों की तकफ़ीन और तदफ़ीन का वर्णन करते हुए सीरत खात्मन नबिय्यीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब यह लिखते हैं कि

"लाशों की देख-भाल के बाद तकफ़ीन का काम शुरू हुआ। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो कपड़े शहीदों के शरीर पर हैं वे इसी तरह रहने दिए जाएं और शहीदों को नहलाया न जाए। जबकि किसी के पास कफ़न के लिए और कपड़ा हो तो वह पहने हुए कपड़ों के ऊपर लपेट दिया जाए। नमाज़ जनाज़ा भी उस समय अदा नहीं की गई। इसलिए बग़ैर नहलाए और बग़ैर नमाज़-ए-जनाज़ा अदा किए शहीदों को दफ़ना दिया गया। और साधारणतया एक एक कपड़े में दो दो सहाबियों को एक साथ कफ़न दे कर के एक ही क़ब्र में एक साथ दफ़न कर दिया गया। जिस सहाबी को क़ुरआन शरीफ़ ज़्यादा आता था उसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद पर नीचे कब्र में उतारते हुए प्रथम रखा जाता।"और फिर लिखते हैं कि "जबकि उस वक़्त-नमाज़ जनाज़ा अदा नहीं की गई लेकिन बाद में वफ़ात के समय के क़रीब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खासतौर पर उहद के शहीदों पर जनाज़े की नमाज़ पढ़ी। यह आप स॰अ॰व॰ ने विभिन्न तारीख़ों से प्रमाणित किया है। या नमाज़ पढ़ी गई या दुआ की गई भी हो सकता है लेकिन बहरहाल बड़े दर्द से उनके लिए नमाज़े जनाज़ा अदा की और बड़े दर्द-ए दिल से उनके लिए दुआ फ़रमाई।"

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन स॰अ॰व॰ , पृष्ठ 501502)

हो सकता है कि दुआ की हो। जिस तरह पहले वर्णन हो चुका है। हर एक की क़ब्र पर जा कर दुआ की हो और बड़े दर्द से उनके लिए दुआ फ़रमाई

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह वर्णन करते हैं कि मैंने अपने पिता के लिए जंग उहद के छ: माह बाद क़ब्र बनाई और उन्हें उस में दफ़न किया तो मैंने उनके शरीर में कोई बदलाव नहीं देखा सिवाए उनकी दाढ़ी के कुछ बालों के जो ज़मीन के साथ लगे हुए थे।

(उसुदुल ग़ाबा फ़ी मअरफतिस्सहाबा, भाग 3 पृष्ठ 344 अब्दुल्लाह बिन अम्र, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2003 ई)

एक दूसरी जगह रिवायत में आता है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि॰ वर्णन करते हैं कि जंग उहद के अवसर पर एक क़ब्र में दो लोगों को दफ़न किया गया और मेरे पिता के साथ भी एक सहाबी को दफ़न किया गया। छ: माह गुज़र गए फिर मेरे दल ने चाहा कि मैं उन्हें अलग क़ब्र में अकेला दफ़न करूँ। इसलिए मैंने उन्हें क़ब्र से निकाला तो मैंने देखा कि ज़मीन ने उनके शरीर में कुछ भी बदलाव नहीं किया था सिवाए उनके कान के गोश्त में से थोड़ा सा।

(अत्तबकातुल कुब्रा, भाग-3 पृष्ठ 425 अब्दुल्लाह बिन अम्र, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत,1990 ई)

जंग-उहद के छयालीस वर्ष बाद हज़रत अमीर मुआविया ने अपने दौरे हकूमत

में नहर जारी की जिस का पानी जंगे उहद के शहीदों की क़ब्रों में दाख़िल हो गया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र और हज़रत अम्र रज़ि॰ बिन जमूह रज़ि॰ की क़ब्र में भी पानी दाख़िल हो गया। जब उनकी क़ब्र खोदी गई तो उन पर दो चादरें पड़ी हुई थीं और यह रिवायत वर्णन करने वाले कहते हैं कि उनके चेहरे पर ज़ख़्म था और उनका हाथ उनके ज़ख़्म पर था और फिर आगे जो रिवायत है वह बहरहाल दृष्टिगत है। वर्णन तो मैं कर रहा हूं लेकिन ज़रूरी नहीं है कि इस पर तसल्ली भी हो। यह क्योंकि कुछ तारीख़ी किताबों में लिखा है और पढ़ने वाले कुछ पढ़ते भी हैं इसलिए यहां वर्णन करने का मक़सद केवल यह है कि यह हो सकता है कि इस में कुछ वृद्धि भी की गई हो। बहरहाल वह कहते हैं ज़ख़्म से जब हाथ हटाया गया तो ज़ख़्म से ख़ून जारी हो गया (जो नामुमकिन है)। उनका हाथ वापस ज़ख़्म पर रख दिया गया तो फिर ख़ून रुक गया। इस किस्म की रिवायतें भी कुछ बीच में आ जाती हैं जो दृष्टिगत होती हैं। जाबिर बिन अब्दुल्लाह कहते हैं कि मैंने क़ब्र में अपने पिता को देखा तो ऐसा मालूम हुआ मानों वह सो रहे हैं।

(अत्तबकातुल कुब्रा, भाग 3 पृष्ठ 424 अब्दुल्लाह बिन अम्र, दारुल्कुतुब अल्इल्मिया बेरूत,1990ई)(किताबुल मग़ाज़ी, भाग 1 पृष्ठ 267 प्रकाशित आलेमुल कुतुब बेरूत 1984 ई)

हालाँकि छ: महीने के बाद जब उन्होंने निकाला था उस समय भी वह कहते हैं गोश्त पर कुछ असर था तो 46 वर्ष बाद तो यह हो ही नहीं सकता कि न असर हुआ हो और हड्डियां न रह गई हों और यह कानूने क़ुदरत है। इस तरह नहीं हो सकता कि शरीर में कोई बदलाव नहीं था।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि वर्णन करते हैं कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मिले तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे जाबिर !क्या बात है मैं तुम्हें दुखी देख रहा हूँ? मैं ने कहा की या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे पिता जंग उहद में शहीद हो गए और वह क़र्ज़ और औलाद छोड़ गए हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या मैं तुम्हें उस चीज़ की ख़ुशख़बरी न दूं जिस से अल्लाह ने तुम्हारे पिता से मुलाक़ात की है? मैंने कहा की जी या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह ने किसी से कलाम नहीं किया परन्तु पर्दे के पीछे से, जिस से भी अल्लाह तआला ने कलाम किया पर्दे के पीछे से किया लेकिन अल्लाह ने तुम्हारे पिता को ज़िंदा किया और फिर उनसे आमने सामने हो कर कलाम किया और फ़रमाया हे बंदे! मुझ से मांग कि मैं तुझे दूं। उन्होंने कहा कि हे मेरे रब मुझे पुन: ज़िंदा कर दे ताकि मैं तेरी राह में पुन: क़तल किया जाऊं। एक रिवायत में है कि इस अवसर पर हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा कि हे मेरे रब मैं ने तेरी इबादत का हक़ अदा नहीं किया। मेरी इच्छा है कि तू मुझे पुन: दुनिया में भेज ताकि मैं तेरे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हो कर तेरी राह में लड़ूं और तेरी राह में पुन: मारा जाऊं। इस पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मैं यह फ़ैसला कर चुका हूँ कि जो एक-बार मर जाएं वह दुनिया में पुन: नहीं लौटाए जाऐंगे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र ने अल्लाह से कहा कि हे मेरे रब मेरे पीछे रहने वालों तक यह बात पहुंचा दे। इस अवसर पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई कि

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ أَمْوَاتًا بَلْ أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْ

(आले इमरान 170) अर्थात जो अल्लाह की राह में मारे गए तुम उन्हें कदापि मुर्दा न समझो बल्कि वे तो ज़िन्दा हैं। उन्हें उनके रब के यहाँ रिज़्क़ प्रदान किया जा रहा है।

(सुंन अत्तिर्मज़ी, बाब तफ़सीर उल-क़ुरआन, विषय सूची तफ़सीर सूरा आल-ए-इमरान ,नंबर 3010)(दलायल अन्नुबुव:, भाग3, पृष्ठ298, इजादुल हर्ब व मा ज़हरा फी अश्शुहदायए, दारुल क़ुतुब अल्इलमिया बेरुत2002-ई) (अलइसतीआब फ़ी मअरफतिस्सहाबा, भाग 3,पृष्ठ 955-956, अब्दुल्लाह बिन अम्र, दारुल जैल बेरूत 1992-ई)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि के संबंध में पहले भी यह आयत मैं वर्णन कर चुका हूँ। अल्लाह तआला से हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र के मुकालमा वाली घटना की तफ़सील हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अल-राबे अपनी एक तक़रीर में जो ख़िलाफ़त से पहले की थी इस तरह वर्णन की है कि

इस घटना में भिन्न भिन्न प्रकार की सुन्दरता कूट कूट कर भरी हुई है और इसे जिस करवट से देखें यह एक नया हुस्न दिखाती है। इन सभी विषयों के अतिरिक्त इस से हमें पता चलता है कि किस तरह निरंतर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सम्बन्ध अपने रब से क़ायम था। बंदों पर भी दया दृष्टि फ़र्मा रहे थे और रब से भी दिल जोड़े रखा था। एक पहलू अपने सहाबा पर झुका हुआ था तो दूसरा पहलू क्रपालु ख़ुदा से निरंतर जुड़ा हुआ था। वह वजूद जो अमन की हालत में ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّ (अन्नज्म 9) के उफ़क़-ए-आला पर फ़ायज़ रहा, जंग की हालत में भी एक क्षण इससे अलग न हुआ। एक निगाह युद्ध के मैदान की निगरानी पर थी तो दूसरी जमाले यार के दृश्यों में व्यस्त थी। एक कान रहमत से सहाबा की ओर झुका हुआ था तो दूसरा फरिश्तों से अपने रब की मीठी वाणी सुनने में व्यस्त। हाथ कामों में व्यस्त था परन्तु दिल ख़ुदा की याद में व्यस्त था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा की दिलदारी फ़रमाते थे तो ख़ुदा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दिलदारी फ़र्मा रहा था। अब्दुल्लाह बिन अम्र की हार्दिक अवस्था की ख़बर देकर दरअसल अल्लाह तआला आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह पैग़ाम दे रहा था कि हे सबसे बढ़कर मुझसे मुहब्बत करने वाले! देख तेरा भी कैसा इशक़ हमने अपने आरिफ़ बंदों के दिल में भर दिया है कि संसार से गुज़र जाने के बाद भी तेरा ख़्याल उन्हें सताता है और तुझे युद्ध के मैदान में अकेला छोड़ के चले जाने पर कितने दुखी हैं। तेरे मुक़ाबला पर उन्हें जन्नत की भी लालच नहीं रही। उनकी जन्नत तो बस यही है कि तेज़ तलवारों से बार-बार काटे जाएं परन्तु तेरे साथ रहें, फिर तेरे साथ रहें ,फिर तेरे साथ रहें।

(ख़ुत्बाते ताहिर ख़िलाफ़त से पूर्व का जलसा के भाषण 1979 ई, पृष्ठ 350-349)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि॰ वर्णन करते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र जब फ़ौत हुए तो उन पर क़र्ज़ था। मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सहायता मांगी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके क़र्ज़-लेने वालों को समझाएँ कि वे उनके क़र्ज़ में से कुछ कमी कर दें तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे इस ख़ाहिश का इज़हार किया परन्तु उन्होंने कमी न की। तब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे फ़रमाया कि जाओ और अपनी ख़जूरों की हर एक किस्म को अलग अलग करो। अजवा खजूर की किस्म को अलग रखना और इज़क बिन ज़ैद खजूर की किस्म को अलग। फिर मुझे पैग़ाम भेजना। इसलिए मैंने ऐसा ही किया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कहला भेजा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाएं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खजूरों के ढेर पर या उनके मध्य बैठ गए। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उन लोगों को माप कर दो। इसलिए मैंने उनको माप कर दिया यहां तक कि जो उनका हक़ था मैंने उनको पूरा दे दिया। फिर भी मेरी खजूरें बच गईं। ऐसा मालूम होता था कि उनमें कुछ कमी नहीं हुई।

(सही बुख़ारी, किताबुल बुयूअ, बाब अलकील अलल बाय वल मोती, हदीस नम्बर 2127)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र अपने पीछे रहने वालों में अपने बेटे हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि के इलावा छ: बेटियां छोड़ कर गए। सही बुख़ारी की एक रिवायत के अनुसार हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र ने पीछे रहने वालों में सात या नौ बेटियां छोड़ी थीं।

(सुंन निसाई, किताल वसाया, बाब वासिया बिल सुल्स, हदीस नंबर 3666) (बुख़ारी ,किताब अल्नफ़कात बाब ओन्नुल मरात ज़ोजाहा फ़ी व्ल्दोहू हदीस नंबर5367)

अब अगला वर्णन जिन सहाबी का है उनका नाम है हज़रत अबु दुजाना। अबु दुजअना हज़रत सिमआक बिन ख़रशह। हज़रत अबु दुजाना का संबंध अन्सार के क़बीला ख़ज़रज की शाख़ बनू सअद से है। हज़रत अबु दुजाना के पिता का नाम ख़रशा था। कुछ कहते हैं कि ओस था और उनके दादा का नाम ख़रशा था। हज़रत अबु दुजाना के पिता का नाम हज्मा बिन्त हर्मल था। आप अपने नाम की निसबत अपने उप नाम अबु दुजाना से ज़्यादा मशहूर थे। हज़रत अबु दुजाना का एक बेटा था जिसका नाम ख़ालिद था और उसकी माता का नाम आमना बिन्त अम्र था।

(उसुदुल ग़ाबा भाग 2 पृष्ठ 317 سِمَاكُ بِنْ خَرَشَه प्रकाशित दारुल फ़िक्र बेरूत लबनान 2003 ई) (अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 419 अबु दुजाना प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 1990 ई)

हज़रत उतबा बिन ग़ज़वान मक्का से हिजरत कर के जब मदीना पहुंचे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके और हज़रत अबु दुजाना के मध्य

भाई चारा क़ायम फ़रमाया।

(अत्तबकातुल कुब्रा ,भाग 3 ,पृष्ठ 420, अबु दुजाना प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत, 1990 ई)

हज़रत अबु दुजाना जंग बदर, उहद और अन्य समस्त जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रहे

(उसुदुल ग़ाबा, भाग 2 ،पृष्ठ 317، मीसाक बिन ख़रशा प्रकाशित दारुल फ़िक्र बेरूत लबनान 2003-ई)

हज़रत अबु दुजाना की गणना अंसार के बड़े सहाबा में होती थी और उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ज़वात में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त था (अल इसतीआब फ़ी मारफ़तील असहाब, भाग 2, पृष्ठ 212, सिमाक बिन ख़रशा प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2010 ई)

जब जंग होती तो हज़रत अबु दुजाना बहुत बहादुरी का इज़हार करते और वह कमाल के घोड़ सवार थे। उनके पास सुर्ख़-रंग का एक रूमाल था जिसे वह केवल जंग के समय सर पर बाँधते थे। जब वह सुर्ख़ रूमाल सर पर बाँधते तो लोगों को इलम हो जाता कि अब वह लड़ाई के लिए तैयार हैं। हज़रत अबु दुजाना की गणना दिलेर और बहादुर लोगों में होती थी।

(उसुदुल ग़ाबा फ़ी मअरफतिस्सहाबा, भाग5, पृष्ठ96, अबु दुजाना सिमाक बिन ख़रशा, प्रकाशित दारुल फ़िक्र बेरूत लबनान 2003-ई)

मुहम्मद बिन इब्राहीम अपने पिता से रिवायत करते हैं कि हज़रत अबु दुजाना जंगों में अपने सुर्ख़ पगड़ी के कारण से पहचाने जाते थे और जंगे बदर में भी यह उनके सिर पर थी और मुहम्मद बिन उम्र कहते हैं कि हज़रत अबु दुजाना जंग-उहद में भी इसी तरह शामिल हुए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ साबित-क़दम रहे और मौत पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बैअत की।(अत्तबकातुल कुब्रा , भाग 3 ،पृष्ठ 420, अबु दुजाना दारुल क़ुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान1990-ई)

जंगे उहद के दिन हज़रत अबु दुजाना और हज़रत मसअब बिन अम्र ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का भरपूर बचाव किया। हज़रत अबु दुजाना बहुत अधिक ज़ख़मी हो गए थे और हज़रत मसअब बिन अम्र उस दिन शहीद हुए।

(अल्इस्तेयाब फ़ी मअरफतिस्सहाबा, भाग 4, पृष्ठ 209 अबु दुजाना अन्सारी, प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2010-ई)

हज़रत अनस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उहद के दिन एक तलवार पकड़ी और फ़रमाया।

مَنْ يَأْخُذُ مِنِّيْ هٰذَا؟ इसे मुझ से कौन लेगा? सबने अपने हाथ बढ़ाए और उनमें से हर एक ने कहा। मैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर फ़रमाया فَمَنْ يَأْخُذُهٗ بِحَقِّهٖ। कौन इस को इस के हक़ के साथ लेगा? हज़रत अनस कहते हैं इस पर लोग रुक गए तो हज़रत मिसाक बिन ख़रशा अबु दुजाना ने कहा कि मैं इस को इस के हक़ के साथ लेता हूँ। हज़रत अनस कहते हैं कि उन्होंने तलवार ली और मुशरिकों के सिर फाड़ दिए। यह मुस्लिम की हदीस है।

(सही मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइल अलसहाबा, विषय सूची मन फ़ज़ाइल अबु दुजाना सिमाक बिन ख़रशा, हदीस 6353)

एक दूसरी रिवायत में आता है कि हज़रत अबु दुजाना ने पूछा इसका हक़ क्या है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया: इससे किसी मुस्लमान को क़तल न करना और इसके होते हुए किसी काफ़िर के मुक़ाबिल पर न भागना अर्थात डट कर मुक़ाबला करना। इस पर हज़रत अबु दुजाना ने कहा क्या मैं इस तलवार को इसके हक़ के साथ लेता हूँ। जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबु दुजाना को तलवार दी तो उन्होंने इससे मुशरिकीन के सिर फाड़ दिए। उन्होंने इस अवसर पर ये अशआर पढ़े।

أَنَا الَّذِيْ عَاهَدَنِيْ خَلِيْلِيْ
وَنَحْنُ بِالسَّفْحِ لَدَى النَّخِيْلِ
اَنْ لَّا أَقُوْمَ الدَّهْرَ فِي الْكَيُوْلِ
أَضْرِبُ بِسَيْفِ اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ

मैं वह हूँ जिस से मेरे दोस्त ने वादा लिया है जबकि हम सफ़ा स्थान पर खजूर के दरख़्तों के पास थे और वह वादा यह है कि मैं लश्कर की पिछली सफ़ों में न खड़ा हूँ और अल्लाह और रसूल की तलवार से दुश्मनों से लड़ाई करूँ। हज़रत अबु दुजाना घमंड वाली चाल चलते हुए लश्कर की सफ़ों के मध्य चलने लगे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

إِنَّ هٰذِهٖ مِشْيَةٌ يُبْغِضُهَا اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ إِلَّا فِيْ هٰذَا الْمُقَامِ۔

कि यह ऐसी चाल है जो अल्लाह को नापसंद है इस मुक़ाम के अतरिक्त अर्थात जंग के अवसर पर।

(अलअसाबह फ़ी तमीज़िस्सहाब:, भाग 7, पृष्ठ100, अबु दुजाना अल-अन्सारी दारुल क़ुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2005 ई)(उसुदुल ग़ाबा फ़ी मअरफतिस्सहाबा, भाग 2, पृष्ठ 317, सिमअक़ बिन ख़रशा ,प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उहद के दिन एक तलवार प्रस्तुत की और फ़रमाया مَنْ يَأْخُذُ هٰذَا السَّيْفَ بِحَقِّهٖ कि कौन है जो इस तलवार को इस के हक़ के साथ लेगा? हज़रत ज़ुबैर कहते हैं मैं खड़ा हुआ और कहा क्या या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से विमुखता फ़रमाई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर फ़रमाया कौन है जो इस तलवार को इस के हक़ के साथ लेगा? मैंने फिर कहा क्या या रसूल अल्लाह मैं। आप ने फिर मुझसे विमुखता फ़रमाई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर फ़रमाया कौन है जो इस तलवार को इस के हक़ के साथ लेगा? हज़रत अबु दुजाना सिमाक बिन ख़रशह खड़े हुए और कहा हे अल्लाह के रसूल! मैं इस तलवार को इस के हक़ के साथ लेता हूं और इस का हक़ क्या है? आप ने फ़रमाया इस से किसी मुस्लमान को क़तल न करना और इस के होते हुए किसी काफ़िर से न भागना, डट कर मुक़ाबला करना। हज़रत ज़ुबैर रज़ि कहते हैं कि इस के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तलवार अबु दुजाना को प्रदान फ़रमाई और अबु दुजाना की यह आदत थी कि जब जंग का इरादा करते तो सुर्ख़ रूमाल सिर पर बांध लेते थे। हज़रत ज़ुबेर कहते हैं कि मैं ने कहा आज मैं देखूँगा कि यह किस तरह इस तलवार का हक़ अदा करता है। हज़रत ज़ुबेर कहते हैं कि अबु दुजाना के सामने जो भी आया वह उसको हलाक करते और काटते हुए आगे बढ़ने लगे यहां तक कि वह लश्कर से गुज़र कर उनकी औरतों के सरों पर जा पहुंचे जो पहाड़ के दामन में ढोल बजा रही थीं और उनमें से एक औरत यह कह रही थी। यह शेअर पढ़ रही थी। इस का अनुवाद यह है कि हम तारिक़ सुबह के सितारे की बेटियां हैं जो बादलों पर चलती हैं। यदि तुम आगे बढ़ोगे तो हम गलें मिलेंगी और बैठने के लिए तकिए लगाऐंगी और यदि तुम पीठ फेर गए तो हम तुमसे जुदा हो जाएँगी। यह ऐसी जुदाई होगी कि फिर तुम में और हम में मुहब्बत का कोई संबंध बाक़ी नहीं रहेगा।

हज़रत ज़ुबेर कहते हैं कि मैंने देखा कि अबु दुजाना ने एक औरत पर तलवार चलाने के लिए अपना हाथ उठाया और फिर रोक लिया। जब जंग ख़त्म हुई तो मैं ने उनसे कहा मैं ने तुम्हारी सारी लड़ाई देखी है। तुमने एक औरत पर हाथ उठाया और फिर नीचे कर लिया। इस की क्या वजह थी? उन्होंने कहा अल्लाह की क़सम मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तलवार का सम्मान किया कि इस के द्वारा किसी औरत को क़तल करूँ। यह नहीं हो सकता था कि मैं किसी औरत के क़तल के लिए रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तलवार इस्तिमाल करूँ इसलिए मैं रुक गया। एक और रिवायत में है कि यह औरत हिंदा पत्नी अबुसुफ़ियान थी जो अन्य औरतों के साथ मिलकर गाने गा रही थी। जब इस पर हज़रत अबु दुजाना ने अपनी तलवार ऊंची की तो उसने मदद के लिए बुलंद आवाज़ से कहा हे संहर लेकिन कोई मदद को न आया। हज़रत अबु दुजाना ने अपनी तलवार नीचे कर ली और वापस चले गए। हज़रत ज़ुबैर के पूछने पर उन्होंने कहा कि मैंने नापसंद किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,

JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

तलवार से किसी औरत को मारूं जिसका कोई मददगार नहीं था।

(अल्मुस्तदरिक अलस्सहीहैन, भाग 3, पृष्ठ 441- 440, किताब मअरफ़तिस्सहाबा वर्णन मनाक़िब अबु दुजाना रिवायत नम्बर 5088, प्रकाशित दारुल फ़िक्र बेरूत2002ई)(शरह अल्लामा जरक़ानी अल्लाल मुवाहिब अलल दुनिया, भाग 2, पृष्ठ 407- 406, किताबुल मग़ाज़ी बाब ग़ज़व उहद, दारुल क़ुतुब अल्इलमिया बेरूत 1996 ई)

हज़रत अबु दुजाना की इस घटना का वर्णन करते हुए सीरत खात्मनबिय्यीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब ने उसे इस तरह वर्णन फ़रमाया है कि मुबारिज़त में जब कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को हार झेलनी पड़ी तो कुफ़्फ़ार ने यह दृश्य देखा तो गुस्से में आकर आम धावा बोल दिया। मुस्लमान भी तकबीर के नारे लगाते हुए आगे बढ़े और दोनों फ़ौजें आपस में गुत्थम गुत्था हो गईं। शायद इसी अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी तलवार हाथ में लेकर फ़रमाया कौन है जो इसे लेकर इस का हक़ अदा करे? बहुत से सहाबा ने इस सम्मान को प्राप्त करने की इच्छा में अपने हाथ फैलाए। जिन में हज़रत उमर और ज़ुबैर बल्कि कुछ रिवायतों के अनुसार हज़रत अबुबकर और हज़रत अली भी शामिल थे। परन्तु आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना हाथ रोके रखा और यही फ़रमाते रहे कि कोई है जो इस का हक़ अदा करे? आख़िर अबु दुजाना अन्सारी ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और कहा कि हे अल्लाह के रसूल मुझे प्रदान फरमाएं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह तलवार उन्हें दे दी और अबु दुजअना उसे हाथ में लेकर घमंड की चाल से अर्थात बड़े फ़ख़र से और अकड़ते हुए कुफ़्फ़ार की ओर आगे बढ़े। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा से फ़रमाया ख़ुदा को यह चाल नापसंद है परन्तु ऐसे अवसर पर नापसंद नहीं। ज़ुबैर जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तलवार लेने के लिए सबसे ज़्यादा इच्छुक थे और निकट के सम्बन्ध के कारण अपना हक़ भी ज़्यादा समझते थे, दिल ही दिल में परेशान होने लगे कि क्या कारण है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे यह तलवार नहीं दी और अबु दुजाना को दे दी और अपनी इस परेशानी को दूर करने के लिए उन्होंने दिल में वादा किया कि मैं इस मैदान में अबु दुजाना के साथ साथ रहूँगा और देखूँगा कि वह इस तलवार के साथ क्या करता है। इसलिए वह कहते हैं कि अबु दुजाना ने अपने सर पर एक सुर्ख़ कपड़ा बाँधा और इस तलवार को लेकर हमद के गीत गुनगुनाता हुआ मुशरिकीन की सफ़ों में घुस गया और मैंने देखा कि जिधर जाता था मानों मौत बिखेरता जाता था और मैंने किसी आदमी को नहीं देखा जो उसके सामने आया हो और फिर वह बचा हो। यहाँ तक कि वह कुरेश के लश्कर में से अपना रास्ता काटता हुआ लश्कर के दूसरे किनारे निकल गया जहां क़ुरैश की औरतें खड़ी थीं। हिंदा पत्नी सुफियान जो बड़े ज़ोर शोर से अपने मर्दों को जोश दिला रही थी उस के सामने आई और अबु दुजअना ने अपनी तलवार उस के ऊपर उठाई जिस पर हिंदा ने बड़े ज़ोर से चीख़ मारी और अपने मर्दों को सहायता के लिए बुलाया परन्तु कोई व्यक्ति उस की मदद को न आया। ज़ुबैर कहते हैं कि लेकिन मैं ने देखा कि अबु दुजाना ने स्वयं ही अपनी तलवार नीची करली और वहां से हट आया। ज़ुबैर रिवायत करते हैं कि इस अवसर पर मैंने अबु दुजाना से पूछा कि यह क्या माजरा है कि पहले तुमने तलवार उठाई फिर नीचे कर ली। उसने कहा कि मेरा दिल इस बात पर तैयार नहीं हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तलवार एक औरत पर चलाऊं और औरत भी वह जिसके साथ उस समय कोई मर्द मुहाफ़िज़ नहीं। ज़ुबैर कहते हैं मैंने उस समय समझा कि वास्तव में जो हक़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तलवार का अबु दुजाना ने अदा किया है वह शायद मैं न कर सकता और मेरे दिल की परेशानी दूर हो गई।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन पृष्ठ 489, 490)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि अल्लाहो अन्हो ने इस घटना को इस प्रकार वर्णन फ़रमाया है। फ़रमाते हैं कि उहद की जंग में रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक तलवार प्रस्तुत की और फ़रमाया यह तलवार मैं उस व्यक्ति को दूँगा जो इस का हक़ अदा करने का वादा करे। बहुत से लोग इस तलवार को लेने के लिए खड़े हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबु दुजाना अंसारी को वह तलवार दी। लड़ाई में एक जगह मक्का वालों के कुछ सिपाही अबु दुजाना पर हमला-आवर हुए। जब आप उनसे लड़ रहे थे तब आपने देखा कि एक सिपाही सबसे ज़्यादा जोश के साथ लड़ाई में हिस्सा ले रहा है। आप ने तलवार उठाई और उस की ओर लपके लेकिन फिर उस को छोड़कर वापस आ गए अर्थात हज़रत दुजाना ने तलवार उठाई, उस की ओर लपके लेकिन फिर छोड़ के वापस आ गए। आप से किसी दोस्त ने पूछा कि आपने उसे क्यों छोड़ दिया तो उन्होंने उत्तर दिया कि जब उसके पास गया तो उसके मुँह से एक ऐसा वाक्य निकला जिस से मुझे मालूम हो गया कि वह मर्द नहीं औरत है। उनके साथी ने कहा। बहरहाल वह सिपाहियों की तरह फ़ौज में लड़ रही थी फिर आपने उसे छोड़ा क्यों? अबु दुजाना ने कहा मेरे दिल ने बर्दाश्त न किया कि मैं रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दी हुई तलवार को एक कमज़ोर औरत पर चलाऊं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फिर फ़रमाते हैं कि अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम औरतों के सम्मान और एहतिराम की हमेशा शिक्षा देते थे जिसके कारण से कुफ़्फ़ार की औरतें ज़्यादा दिलेरी से मुसलमानों को नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश करती थीं परन्तु फिर भी मुस्लमान इन बातों को बर्दाश्त करते चले जाते थे।

(उद्धरित अज़ तफ़सीर ए कबीर भाग 2,पृष्ठ 421, 422)

अबु दुजाना के संबंध में मशहूर मुस्तश्रिक़ सर विलियम मियोर लिखते हैं कि जंग के आरम्भ में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी तलवार ली और फ़रमाया कौन यह तलवार इसके हक़ के साथ लेगा? उमर, ज़ुबैर और बहुत से सहाबा ने लेने की ख़ाहिश की लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मना कर दिया। आख़िर में अबु दुजाना ने कहा, तो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको दे दी और उन्होंने उस के साथ काफ़िरों के सिर तन से जुदा करने शुरू कर दिए।

(LIFE OF MAHOMET by Sir William Muir, pg : 269 Smith Elder&co, Waterloo place London 1878)

फिर वह लिखते हैं कि मुसलमानों के ख़तरनाक हमलों के सामने मक्की लश्कर के पांव उखड़ने लग गए। क़ुरैश की टुकड़ी ने कई बार यह कोशिश की कि इस्लामी फ़ौज के बाईं ओर पीछे से हो कर हमला करें परन्तु हर बार उनको उन पच्चास तीर अंदाज़ों के तीर खा कर पीछे हटना पड़ा जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वहां खासतौर पर निर्धारित किए हुए थे। मुसलमानों की ओर से उहद के मैदान में भी वही बहादुरी मर्दानगी और मौत तथा ख़तरे से वही निडरता दिखाई जो बदर के अवसर पर उन्होंने दिखाई थी। मक्का के लश्कर की सफ़ें फट-फट जाती थीं जब अपने कवच के साथ सुर्ख़ रूमाल बाँधे अबु दुजाना उन पर हमला करता था और उस तलवार के साथ जो उसे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी थी चारों ओर मानों मौत बिखेरता जाता था। हम्ज़ा रज़ि अपने सिर पर शुतुरमुर्ग के परों की कलग़ी लहराता हुआ हर जगह श्रेष्ठ नज़र आता था। अली अपने लंबे और सफ़ेद झंडों के साथ और ज़ुबैर अपनी शोख़ रंग की चमकती हुई लाल पगड़ी के साथ बहादुराने-इलयड की तरह जहां भी जाते थे दुश्मन के लिए मौत और परेशानी का पैग़ाम अपने साथ ले जाते थे। यह वह दृश्य हैं जहां बाद की इस्लामी फ़ुतूहात के हीरो तर्बीयत पाने वाले हुए।

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन,पृष्ठ 490)

यह सारा वर्णन जो पहले मैंने पढ़ा है यह सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में है।

हज़रत इब्ने अब्बास वर्णन करते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उहद से लौटे तो अपनी बेटी फ़ातिमा को अपनी तलवार दी और फ़रमाया हे बेटी इस से ख़ून को धो दो। हज़रत अली ने भी अपनी तलवार उनको दी और कहा इस से भी ख़ून धो दो। अल्लाह की क़सम आज उसने मेरा ख़ूब साथ दिया है। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यदि तुमने लड़ने का हक़ अदा कर दिया है तो अवश्य सहल बिन हुनैफ़ और अबु दुजाना ने भी लड़ने का हक़ अदा किया है। एक रिवायत में सहल बिन हुनैफ़ के स्थान पर हारिस बिन

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

सिम्मा का नाम भी आता है।

(उसुदुल ग़ाबा फ़ी मअरफतिस्सहाबा, भाग2, पृष्ठ 317 सिमाक बिन ख़रशा, प्रकाशित दारुल फ़िक्र बेरूत लबनान 2003 ई (अत्तबकातुल कुबरा,भाग 3, पृष्ठ 420 अबु दुजाना, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 1990 ई)

ज़ैद बिन असलम वर्णन करते हैं कि हज़रत अबु दुजाना के पास लोग आए जबकि आप रज़ि बीमार थे लेकिन आप रज़ि का चेहरा बहुत चमक रहा था। किसी ने पूछा कि आप रज़ि का चेहरा क्यों चमक रहा है? तो हज़रत अबु दुजाना ने कहा मेरे कर्मों में से मेरे दो काम ऐसे हैं जो मेरे निकट बहुत ज़्यादा वज़नी और दृढ़ हैं। पहला यह कि मैं कभी ऐसी बात नहीं करता जिसका मुझसे संबंध न हो। दूसरा यह कि मेरा दिल मुसलमानों के लिए हमेशा साफ़ रहता है।

(अत्तबकातुल कुबरा ,भाग3, पृष्ठ 420 , अबु दुजाना, प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

हज़रत अबु दुजाना जंग यमामा में शहीद हुए। मुसैलमा कज़्ज़ाब ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद झूठी नबुव्वत का दावा करके मदीना पर आक्रमण का इरादा किया तो हज़रत अबु बकर ने इसको ध्वस्त करने के लिए 12 हिज्री में लश्कर रवाना किया। हज़रत अबु दुजाना भी इस लश्कर का हिस्सा थे। हज़रत अबु दुजाना ने जंग यमामा में सख़्त लड़ाई की और शहादत का सम्मान प्राप्त किया। बनु हन्फिया (पुराना अरब क़बीला जिस के एक बड़े हिस्से ने मुसैलमा कज़्ज़ाब के अधीन क़ियादत मदीना के ख़िलाफ़ बग़ावत की थी) का यमामा में बाग़ था जिस में घेर कर वह लड़ रहे थे और मुसलमानों को अंदर जाने का अवसर नहीं मिल रहा था। हज़रत अबु दुजाना ने मुसलमानों से कहा कि मुझे बाग़ के अंदर फेंक दो। मुसलमानों ने ऐसा ही किया लेकिन उनके दूसरी ओर गिरने से उनकी टांग टूट गई लेकिन फिर भी वह बाग़ के दरवाज़े पर लड़ते रहे और मुशरिकीन को वहां से हटा दिया और मुस्लमान अंदर दाख़िल हो गए। हज़रत अबु दुजाना, मुसैलमा कज़्ज़ाब के क़तल में अब्दुल्लाह बिन ज़ैद और वहशी बिन हर्ब के साथ शामिल थे और यमामा के दिन आप ने शहादत पाई।

(उसुदुल ग़ाबा फ़ी मअरफतिस्सहाबा, भाग 2, पृष्ठ318, सिमाक़ बिन ख़रशा, प्रकाशित दारुल फ़िक्र बेरूत लबनान 2003 ई) (अल्इस्तेयाब फ़ी मअरफतिस्सहाबा, भाग 4 , पृष्ठ 209, अबु दुजाना अलअन्सारी ,प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2010 ई)(अत्तबकातुल कुबरा, भाग3 ,पृष्ठ 420 ,अबु दुजाना प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई) (उर्दू दायरा मआरिफ़ इस्लामीया, भाग 8 , पृष्ठ 695 ,शोबा उर्दू लाहौर)

एक रिवायत में आता है कि हज़रत अबु दुजाना ने जंग सिफ्फिन में हज़रत अली की ओर से लड़ते हुए वफ़ात पाई थी लेकिन यह रिवायत कमज़ोर है। पहली रिवायत ज़्यादा सही और अत्याधिक स्थानों पर वर्णित है

(उसुदुल ग़ाबा फ़ी मअरफतिस्सहाबा, भाग2, पृष्ठ 318, सिमाक बिन ख़रशा, प्रकाशित दारुल फ़िक्र बेरूत लबनान2003-ई)

मैं पहले भी यह वर्णन कर चुका हूँ। यहां पर कुछ हिस्सा वर्णन कर देता हूं जिसका हज़रत अबु दुजाना से संबंध है। अबु दुजाना अंसारी थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मदीना हिज्रत से पहले इस्लाम क़बूल किया था। मदीना के रहने वाले थे। उनको भी यह सम्मान प्राप्त हुआ था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंग बदर में शामिल हुए और अत्याधिक बहादुरी के जोहर दिखाए। इसी तरह उहद की जंग में भी उन्हें शमूलीयत की तौफ़ीक़ मिली और जंग का रुख पलटने के बाद अर्थात जब मुस्लमान पहले जीत रहे थे फिर रुख पल्टा और एक जगह छोड़ने की वजह से काफ़िरों ने पुन: हमला किया और जंग का पाँसा मुसलमानों के ख़िलाफ़ हो गया तो जो सहाबा उस समय आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब रह गए थे उनमें हज़रत अबु दुजाना भी शामिल थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बचाव में यह अत्याधिक ज़ख़्मी भी हुए लेकिन इन ज़ख़्मों के बावजूद यह पीछे नहीं हटे। एक बार बीमारी में अपने साथी को कहने लगे कि शायद मेरे दो कर्म अल्लाह तआला क़बूल कर ले एक यह कि मैं कोई झूठी बात नहीं करता। पीठ पीछे किसी के विरुद्ध नहीं बोलता। लोगों के पीछे उनकी बातें नहीं करता। दूसरे यह कि किसी मुस्लमान के लिए मेरे दिल में द्वेष और कपट नहीं है।

(उद्धरित ख़ुत्बा जुम्अ: 16 मार्च 2018 ई ,उद्धरित अलफ़ज़ल इंटरनेशनल तिथि 06 से 12 अप्रैल 2018 ई भाग 25 संख्या 14 पृष्ठ 5)

उनका वर्णन यहां ख़त्म हुआ

अब कुछ मरहूमीन का मैं वर्णन करूँगा और उनका नमाज़ जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा जिन में से एक शहीद भी हैं जिनको पिछले दिनों शहीद किया गया। श्रीमान महबूब ख़ान साहब पुत्र सय्यद जलाल साहिब ज़िला पेशावर। महबूब ख़ान साहब को मुख़ालफ़ीन अहमदियत ने 8 नवम्बर 2020 ई को सुबह आठ बजे शेख़ मुहम्मदी गांव पेशावर में फायरिंग करके शहीद कर दिया था। اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیۡہِ رَاجِعُوۡنَ۔

विस्तार के अनुसार महबूब ख़ान साहब छ: नवम्बर को ख़ुशहाल टाउन पेशावर से अपनी नवासी जो अपनी फ़ैमिली के साथ जुड़े क़स्बा शेख़ मुहम्मदी में रहती है उनसे मिलने गए। आठ नवंबर को वापसी के लिए घर से निकले। बस स्टॉप के क़रीब पहुंचे थे कि अज्ञात लोगों ने पीछा कर के उन पर फायरिंग कर दी। एक फ़ायर सिर में पीछे से लगा और गोली सामने से निकल गई जिससे मौके पर ही वफ़ात हो गई। اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیۡہِ رَاجِعُوۡنَ۔ । घटना के बाद क़ातिल फ़रार हो गया। शहीद मरहूम की आयु लगभग 80 वर्ष थी। शहीद मरहूम पब्लिक हेल्थ इंजीनियरिंग डिपार्टमैंट से 2002 में बहैसीयत ऑफ़िस सुपरिडेंट रिटायर्ड होने के बाद पैंशनर के स्थान पर ज़िन्दगी व्यतीत कर रहे थे। शहीद मरहूम के पिता सय्यद जलाल साहिब ने 1930 ई के दशक में बैअत की थी। शहीद मरहूम पैदाइशी अहमदी थे।

मरहूम अत्याधिक विशेषताओं वाले थे। तहज्जुद के पाबन्द थे। शराफ़त, हमदर्दी और मेहमान नवाज़ी के अतिरिक्त दया में श्रेष्ठ थे। दावत इल्लाह का जुनून की हद तक शौक़ था। पैग़ामे हक़ पहुंचाने में हमेशा आगे रहते थे। जब कभी उनसे एहतियात की दरख़ास्त की जाती तो उनका एक ही मत होता कि अब तो वैसे भी ख़ुदा के हुज़ूर हाज़िर होने का समय है यदि शहादत मिल गई तो मेरे लिए सआदत होगी। बहरहाल उनकी यह शहादत की भी ख़ाहिश पूरी हो गई। महबूब ख़ान साहब शहीद की पत्नी मिराज बेगम साहिबा को यह सम्मान प्राप्त है कि उनके पिता मुहम्मद सईद साहिब और चाचा बशीर अहमद साहिब 1966 ई में शहीद हुए थे और अब यह सआदत आप के पति को प्राप्त हुई। इस तरह आप एक शहीद की बेटी, शहीद की भतीजी और एक शहीद की पत्नी हैं।

पीछे रहने वालों में उनकी पत्नी मेराज बेगम साहिबा हैं। इस के इलावा दो बेटे हैं मुनव्वर साहिब और फ़ज़ल अहमद साहिब। दो बेटियां हैं ज़कीया बेगम साहिबा और वहीदा बेगम। दो पोते, एक पोती, छ: नवासे और चार नवासियाँ शामिल हैं और आपके छोटे बेटे ने माईक्रो बायलोजी में पी एच डी की है। वह आस्ट्रेलिया में होते हैं। दूसरे जर्मनी में होते हैं। फ़ज़ल अहमद साहिब वह भी पढ़े लिखे हैं। एम.ए. हैं।

उनके बेटे मुनव्वर ख़ान साहिब कहते हैं कि महबूब ख़ान साहब अपने इलाक़े में शांति के क़ियाम के लिए तत्पर रहते थे। कभी कभार झगड़े की सूरत में दो गिरोहों के मध्य सुलह करवाने के लिए अपने पास से ख़ून बहा भी दिया करते थे। आप ग़रीब और ज़रूरतमंद लोगों की मदद के लिए प्रत्येक क्षण तैयार रहा करते थे। लोग अपनी ज़रूरीयात के लिए बिना झिझक आप से रुजू करते और आप उनकी मदद के लिए हमेशा अपने पास कुछ न कुछ नक़दी और अनाज रखा करते थे। निहायत सादा स्वभाव, ख़ामोश व्यक्तित्व के इन्सान थे। निहायत सब्र करने वाले और दूसरों की तकलीफ़ का एहसास करने वाले थे और प्रत्येक क्षण उनकी मदद के लिए तैयार रहते थे। अल्लाह तआला मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाता रहे और उनके परिजनों को भी उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा फ़ख़र अहमद फ़ख़र साहिब मुरब्बी सिलसिला का है, पाकिस्तान में थे। 1 नवंबर 2020 ई को शाम सवा छ: बजे के क़रीब यह अपने बेटे एहतिशाम अब्दुल्लाह के साथ अहमद नगर से आ रहे थे कि एक रोड ऐक्सिडन्ट में अहमद नगर से आते हुए उनकी वफ़ात हुई है। ख़तरनाक ऐक्सिडन्ट था दोनों बाप बेटे की उसी स्थान पर वफ़ात हो गई। اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیۡہِ رَاجِعُوۡنَ۔

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से फ़ख़र साहिब मूसी थे। फ़ख़र साहिब के पिता सैफुर्रहमान साहिब ने ख़ुद बैअत की। उनके ख़ानदान में पहले कोई अहमदी नहीं था। 1968 ई में उन्होंने बैअत की थी और अपने ख़ानदान के पहले अहमदी बने।1996ई में जामिआ अहमदिया रबवा से उत्तीर्ण होने के बाद पाकिस्तान में विभिन्न स्थानों पर फ़ख़र साहिब को सेवा की तौफ़ीक़ मिली फिर उन्हें एवरी कोस्ट पश्चिम अफ़्रीक़ा भिजवाया गया और फिर पिछले आठ वर्ष से यह बतौर मुरब्बी अहमद नगर में सिल्सिला की सेवा की तौफ़ीक़ पा रहे थे। उनकी शादी ताहिरा फ़ख़र साहिबा से हुई जो अली असग़र साहिब की बेटी हैं। इस शादी से उनकी चार बेटियां और एक बेटा एहतिशाम अब्दुल्लाह था जो अपने पिता के साथ ही एक्सिडेंट में फ़ौत हो गया और अब पीछे उनके परिजनों में उनकी पत्नी और चार बेटियां हैं। इस के इलावा उनके

पिता हैं और बहन भाई हैं। उनकी बेटियां वजीहा अम्तुल सबूह, अज़ीज़ा ख़ाफ़िया फ़ख़र, समरीन फ़ख़र और मेहरीन हैं।

फ़ख़र साहिब की पत्नी ताहिरा साहिबा लिखती हैं कि हमारी शादी जब हुई तो मुरब्बी साहिब की ख़ोशाब के एक गांव में पोस्टिंग थी। यह वहां निर्धारित थे। और जब मैं वहां सैंटर में गई तो उन्होंने मुझे मुरब्बी की बीवी के जो फ़राइज़ होते हैं उनके बारे में बताया और समझाया कि अब तुम मेरे साथ वक़्फ़ हो। तुम्हें भी जमाअत के कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिए। इस तरह तर्बीयत की। इस के बाद उनका ट्रांसफ़र बदीन हो गया। मुरब्बी साहिब तो पहले चले गए। यह कुछ अर्से के बाद गई हैं तो कहती हैं कि जिस दिन में वहां पहुंची मैंने पहले सूचना भी दी हुई थी लेकिन वहां गई तो मुरब्बी साहिब वहां सैंटर में ,घर में नहीं थे। मैं मस्जिद में बाहर धूप में बैठी रही। पता लगा कि किसी मुअल्लिम की पत्नी बीमार हैं और उस को ख़ून देने की ज़रूरत है तो मुरब्बी साहिब ख़ून देने गए हुए हैं। मैंने उनको वापसी पर पूछा कि सारा दिन मैं धूप में बैठी रही आपको पता था कि मैं इतना लंबा सफ़र कर के आ रही हूं तो उन्होंने कहा कि वह काम भी बड़ा ज़रूरी था और मुझे समझाया कि इस तरह क़ुर्बानी चाहिए।

एवरी कोस्ट जब यह गए हैं तो वहां भी धर्म की सेवा के कामों के साथ मानव जाति की सेवा के बहुत काम करते रहे और हमेशा बीवी बच्चों पर धर्म को मुक़द्दम रखा। इन की पत्नी कहती हैं की कि मेरी तबीयत एक बार ख़राब हो गई। बेटी का जन्म होने वाला था। मुरब्बी साहिब मैडीकल कैंप के सिलसिले में गए हुए थे। डाक्टर ने हालत चिन्ता जनक बताई लेकिन मुरब्बी साहिब मुझे छोड़ के चले गए और केवल इतना कहा कि अल्लाह फ़ज़ल करेगा। तुम वाक़िफ़ ज़िन्दगी की पत्नी हो। तुम्हें कुछ नहीं होगा। अर्थात कि मुरब्बी साहिब ने हर मामले में धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता दी। मेहमान-नवाज़ी, मानव सेवा, धर्म की सेवा करने वाले थे। अपने बेगाने सबसे प्यार करने वाले थे। बच्चों के साथ दोस्ताना संबंध था। कोई मसला हो चाहे घरेलू हो या ख़ानदानी हो, जमाअत का हो या ग़ैर अज़ जमात लोगों का हो बड़ी ख़ुश-उस्लूबी से समझाते थे। बच्चों को भी यह समझाते थे कि तुम वाक़िफ़ ज़िंदगी के बच्चे हो और एक मुरब्बी की औलाद हो इसलिए हमेशा दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देनी है और अपना अच्छा आचरण प्रस्तुत करना है।

बासित साहिब एवरी कोस्ट में मुरब्बी हैं कहते हैं कि फ़ख़र साहिब बतौर मुबल्लिग़ एवरी कोस्ट तशरीफ़ लाए। बहुत मिलनसार, हँस-मुख, अच्छी तबीयत के मालिक थे। उनके व्यक्तित्व की ख़ास बात उनका दिल मोह लेने वाले बातचीत का ढंग। जिस से मिलते उसे अपना गरवीदा कर लेते। पाँच वर्ष तक ओमे रीजन में मुबल्लिग़ के रूप में सेवा की और उत्तम आचरण और हमदर्दी के कारण से हर छोटा बड़ा आपसे बहुत संबंध रखता था और हमेशा वर्णन करते हैं। जलसा सालाना पर जाने के लिए कुछ ग़रीबों को किराया की अदायगी भी छुप कर दिया करते थे। और कहते हैं उनके रहने के समय के दौरान उनक़ा रीजन हमेशा हाज़री में अव्वल रहा है। वहां के एक लोकल मुअल्लिम समारो हारून साहिब हैं वह भी कहते हैं कि अढ़ाई वर्ष मैंने उनके साथ काम किया। भाइयों की तरह मेरा ख़्याल रखा। जो बात ख़ासतौर पर मैंने नोट की वह यह थी कि अत्याधिक मेहनती और पुरजोश मुबल्लिग़ थे। हर काम बड़ी ज़िम्मेदारी और लगन से करते थे। शीघ्र काम सम्पूर्ण करने की एक धुन सवार होती थी चाहे वह तब्लीग़ का काम हो, चंदे की वसूली का हो, जलसा सालाना की तैयारी का हो। तब्लीग़ का यह हाल था कि चाहते थे कि हर गांव में जमाअत का पैग़ाम भाग-भाग कर पहुंचाया जाए। अल्लाह तआला मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए। उनकी बेटीयों और बीवी का भी हाफ़िज़ तथा नासिर हो और हर परेशानी और मुश्किल से आगे उनको बचाए।

तीसरा जनाज़ा मुरब्बी फ़ख़र अहमद फ़ख़र साहिब के बेटे एहतिशाम अहमद अब्दुल्लाह का है। यह भी जैसा कि मैंने बताया अपने पिता के साथ ही रोड ऐक्सिडन्ट में वफ़ात पा गए थे। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से वक्फे-नौ की बरकत वाली तहरीक में शामिल थे और यह आजकल पहले वर्ष में पढ़ रहे थे और मूसी तो नहीं थे लेकिन वसीयत फ़ार्म Fill किया था जमा नहीं किराया था। बहरहाल यदि फ़ार्म फ़ुल था तो कार पर्दाज़ उस पर कार्रवाई कर सकती है। उनके पिता कहा करते हैं कि मेरा बेटा बहुत सी ख़ूबियों का मालिक था। नेक और आज्ञाकारी था। वक्फे नौ की तहरीक में शामिल था। नमाज़ों का पाबन्द था। ज़ईम साहिब ख़ुद्दाम अहमदिया के हर आदेश का पालन करने वाला और डयूटी वग़ैरा बड़ी ख़ुश-उस्लूबी से देता था और जिस दिन उसने वफ़ात पाई उस दिन भी उसने मस्जिद में डयूटी दी। अल्लाह तआला मरहूम से भी मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे।

और अगला जनाज़ा श्रीमान डाक्टर अब्दुल करीम साहिब पुत्र मियां अब्दुल्लतीफ़ साहिब रब्वाह का है जो स्टेट बैंक आफ़ पाकिस्तान के रिटायर्ड इकनॉमिक एडवाइज़र थे। 14 सितम्बर को 92 वर्ष की उम्र में उनकी वफ़ात हुई। اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیۡہِ رَاجِعُوۡنَ۔

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत मौलवी मुहम्मद अली साहिब के पोते थे। क़ादियान के तालीमुल इस्लाम कॉलेज के पहले बेच में शामिल थे। पार्टीशन के बाद जब कॉलेज लाहौर स्थनांतरित हुआ तो तालीमुल इस्लाम कॉलेज के छात्र के स्थान पर पंजाब यूनिवर्सिटी से एम.ए किया। उस समय वह पूरी यूनिवर्सिटी में तालीमुल इस्लाम कॉलेज के अकेले छात्र थे। बाद में स्टेट बैंक आफ़ पाकिस्तान की जानिब से स्कॉलरशिप पर जॉर्ज वाशिंगटन यूनिवर्सिटी में इकनॉमिक्स में पी एच डी करने के लिए अमरीका चले गए और वहां मस्जिद फ़ज़ल में रिहायश रखी और फ़ारिग़ हो कर तब्लीग़ी सरगर्मीयों में वहां व्यस्त रहते थे। डाक्टर साहिब को पाकिस्तान से बेहद प्यार था। उन्होंने अपने कैरीयर में आलमी बैंक जैसे बैन-उल-अक़वामी संस्थाओं के साथ स्थायी तौर पर काम करने के बावजूद हमेशा पाकिस्तान में ही रह कर काम का चुनाव किया। लंबा समय स्टेट बैंक आफ़ पाकिस्तान में काम किया और मुशीर के स्थान से, एडवाइज़र के स्थान से रिटायर्ड हुए। अपने दौर में उन्होंने IMF और एशीयन डिवैलपमैंट बैंक जैसी संस्थाओं के साथ बहुत सारी मुल्की और ग़ैर मुल्की असाइनमेंटस कामयाबी के साथ सम्पूर्ण की। वज़ारते ख़ज़ाना में भी कुछ अरसा काम किया और एक वफ़ाक़ी बजट भी उनकी निगरानी में तैयार हुआ। आप को दो वर्ष के लिए आई ऐम एफ़ की तरफ से सूडान की हुकूमत के आर्थिक हालात, मामलों के हल के लिए खरतूम भी भेजा गया।

स्टेट बैंक से रिटायर्ड होने के बाद उन्होंने जमाअत की सेवा के लिए रब्वा में रहने को प्राथमिकता दी। इसलिए मआशियात और मज़हब से सम्बन्धित मामले सामने आने पर उनसे परामर्श किया जाता था। यह कमेटी जो बनी हुई थी इस में मैं भी उनसे मश्वरा लेता रहा हूँ। इस मामले में बहुत उत्तम मश्वरा देने वाले थे और अच्छे निबन्ध लिखते थे। बड़ी गहरी नज़र से उनकी हर तहक़ीक़ होती थी और इस पर जो इस का व्यावहारिक हल है वह प्रस्तुत किया करते थे। उनकी कुछ किताबें भी हैं जिनमें "इस्लाम की बुनियादी बातें" अंग्रेज़ी में है। इस्लाम, जीवन दर्शन और मआशी उसूल यह भी अंग्रेज़ी में है। हुरमत सूद यह उर्दू में है। हुसूले रिज़्क़ यह भी उर्दू में है। 1989 ई में रिटायरमैंट के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे की तहरीक पर वक़्फ़ कर के ताशकंद यूनीवर्सिटी में मआशियात को पढ़ाने के लिए उज़बेकिस्तान चले गए। वहां छः माह तक सेवा करते रहे । फिर एक कमेटी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे ने बनाई हुई थी जो क़र्ज़ और सूद के मामलों के मसले पर ग़ौर करने के लिए थी। यह उल्मा और माहरीन पर आधारित एक कमेटी थी और इस की एक सब कमेटी भी थी उस के आप मैंबर थे और मैं ने भी इस में कुछ समय उनके साथ काम किया है। बड़ी गहराई से जैसा कि मैं ने कहा हर बात करते थे। बड़े ठोस तर्क के साथ बात करते थे। सूदी निज़ाम के ऊपर कई निबन्ध उन्होंने मुझे भी लिख कर भेजे हुए हैं और बड़े अच्छे वे निबन्ध हैं। और अधिक उस पर इंशा अल्लाह ग़ौर होगा और हो सकता है कि आइन्दा जो सूदी निज़ाम के ख़िलाफ़ ,उस के मुक़ाबले पर जो निज़ाम प्रस्तुत होना है इस में उनकी कुछ बातें को भी शामिल किया जाए। अल्लाह तआला मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनकी औलाद को भी उनकी नेकियों पर अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 7 अगस्त 2020 पृष्ठ 5 से 10)

☆ ☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

जमाअत अहमदिया के बारे में पूछे जाने वाले प्रश्न तथा उन के उत्तर

सवाल: जब सय्यदना हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम "ख़ातमन्नबिय्यीन" हैं तो फिर ग़ुलाम अहमद साहिब अलैहिस्सलाम नबी तथा रसूल कैसे हो सकते हैं?

जवाब: अहमदिया मुस्लिम जमाअत सय्यदना व मौलाना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को शरीयत वाला आख़री नबी और रसूल यक़ीन करती है और इस अक़ीदा पर पूर्ण ईमान रखती है आप के बाद नई शरीयत वाला कोई नबी नहीं आएगा। और यही अर्थ हदीस (ला नबिय्या बअदी)के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद अब क़यामत तक न कोई नई शरीयत वाला नबी तथा रसूल आ सकता है,और न क़ुरआन मजीद के बाद कोई शरीयत वाली किताब नाज़िल हो सकती है। इस्लाम धर्म के अतिरिक्त न कोई धर्म शुरू हो सकता है। और यही अहमदिया जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति का ईमान तथा विश्वास रखता है, जिस पर वह अल्लाह को जान देगा। इसी हक़ीक़त को समझाते हुए उम्मुल मोमेनीन हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह अन्हा फ़रमाती हैं "قُولُوا خَاتَمَ النَّبِيِّيْن وَلَا تَقُولُوا لَا نَبِيَ بَعْدَهُ،' (अनुवाद)हे मुसलमानों रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबय्यीन कहो,परन्तु यह न कहो कि आपके बाद कोई नबी नहीं होगा।

(दुर्रे मन्सूर फित्तफसीर उलमा सौर, ज़ेरे आयत मा कान मुहम्मदन अब्बा अहदिन.....भाग 5 पृष्ठ 386)

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम उम्मती नबी तथा रसूल हैं (अर्थात उम्मत मुहम्मदिया में से हैं)आप कोई नई शरीयत लेकर नहीं आए,बल्कि शरीयत मुहम्मदिया(इस्लाम पर ही मानव जाति को अनुकरण करवाने और इसी का प्रचार तथा प्रसार के लिए आए हैं जैसे सय्यदना मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा किराम ने अनुकरण किया करते थे और इस का प्रचार करते थे। और आपको "उम्मती नबी रसूल" का दर्जा अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आज्ञापालन तथा अनुकरण के कारण से प्रदान फ़रमाया। अत: आप फ़रमाते हैं

"यदि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत न होता ,और आपका अनुकरण न करता तो यदि दुनिया के समस्त पहाड़ों के बराबर मेरे कर्म होते तो फिर भी मैं कभी यह मुकालमा ,मुख़ातबा का सौभाग्य हरगिज़ न पाता। क्योंकि अब केवल मुहम्मदी नबुव्वत के सब नबुव्वतें बंद हैं। शरीयत वाला नबी कोई नहीं आ सकता और बिना शरीयत के नबी हो सकता है परन्तु वही जो पहले उम्मती हो। अत: इस बिना पर मैं उम्मती भी हूँ और नबी भी।"

(तजल्लियात इलाहिया,रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 412)

उम्मत मुहम्मदिया में जिस महदी तथा मसीह ने आना था उसे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो वसल्लम ने चार बार नबी उल्लाह (अर्थात वह अल्लाह का नबी) होगा फ़रमाया है।

وَ يُحْصَرُ نَبِيُّ اللهِ عِيسَىٰ وَ اَصْحَابُهُ ۔۔۔فَيَرْغَبُ نَبِيُّ اللهِ عِيسَىٰ وَ اَصْحَابُهُ ۔۔۔ثُمَّ يَهْبِطُ نَبِيُّ اللهِ عِيسَىٰ وَ اَصْحَابُهُ ۔۔۔فَيَرْغَبُ نَبِيُّ اللهِ عِيسَىٰ وَ اَصْحَابُهُ اِلَى اللهِ ۔۔۔

(सही मुस्लिम 4 किताबुल फ़ितन पृष्ठ 2254)

अर्थात जब मसील मसीह का प्रतिरूप याजूज माजूज के ज़माना में आएगा तो मसीह नबी उल्लाह और इस के सहाबी दुश्मन के घेराव में कैद हो जाऐंगे फिर मसीह नबी उल्लाह और इस के सहाबी ख़ुदा के हुज़ूर दुआ और विनय के साथ रुजू करेंगे। और इस दुआ के नतीजा में मसीह नबी उल्लाह और इस के सहाबी मुश्किलों के भंवर से नजात पा कर दुश्मन के कैंप में घुस जाऐंगे लेकिन वहां नई किस्म की मुश्किलें पेश आएंगी। और फिर मसीह नबी उल्लाह और इस के सहाबी दोबारा ख़ुदा के हुज़ूर दुआ करते हुए झुकेंगे और ख़ुदा तआला उनकी मुश्किलें दूर फ़रमाएँगे। इत्यादि

अत: जिस आने वाले महदी व मसीह (मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम) को हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह का नबी फ़रमाया दुनिया की कोई ताक़त उसे उम्मती नबी बनने से रोक नहीं सकती।

इस सवाल के जवाब में वर्णन है कि सवाल पूछने वाले और उन के समर्थन करने वाले मुसलमान एक तरफ़ तो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबय्यीन कहते हैं अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम समस्त नबियों के आख़िर पर तशरीफ़ लाए और आपके बाद कोई नबी नहीं आ सकता दूसरी तरफ़ यह विश्वास रखते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम क़यामत से पहले किसी समय ज़मीन पर नाज़िल होंगे तो हर कोई समझ सकता है कि जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम क़यामत से पहले ज़मीन पर नाज़िल होंगे तो वही इस धरती पर आख़िरी नबी होंगे,फिर पूछने वाला आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आख़िरी नबी क्यूँ कर कह सकता है? बड़ी क्षमा के साथ वर्णन है कि ईसाई भी तो यही अक़ीदा रखते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ही नुज़ूल के बाद इस ज़मीन पर आख़िरी नबी और रसूल होंगे।

अहमदिया मुस्लिम जमाअत इस ग़लत अक़ीदा का खण्डन करती है क्योंकि यह अक़ीदा न क़ुरआन मजीद से साबित है और न हदीसों से। हक़ीक़त यही है कि जो फ़ौत हो जाता है वह कभी वापस नहीं आता। अरबी भाषा का नियम है कि ख़ातम का शब्द जब बहुवचन की तरफ़ सम्बन्धित होता है तो उस के अर्थ सर्वोत्तम तथा सर्वोच्च के होते हैं अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम समस्त नबियों और रसूलों से उत्तम तथा उच्च हैं। ख़ातमन्नबिय्यीन के और बहुत से अर्थ हैं। यहां उन में से एक ही वर्णन किया गया है इंशा अल्लाह तआला समझने के लिए काफ़ी होगा।

सवाल :एक ग़ैर अहमदी दोस्त का कहना है कि मैं एक मुसलमान हूँ ,पाँच वक़्त नमाज़ पढ़ता हूँ, क़ुरआन मजीद पढ़ता हूँ, फिर मुझे मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने और जमाअत अहमदिया में शामिल होने की क्या ज़रूरत है?

जवाब: यह एक बहुत बड़ी भूल है जो बहुत से मुसलमानों ने की हुई है मुसलमान नाम रखने से कोई शख़्स सच्चा मुसलमान नहीं बन सकता ,जब तक अल्लाह तआला और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का प्रमुख आदेश "महदी तथा मसीह" पर ईमान लाने के बारे में न माने। याद रहे कि मदीना के यहूद भी यही अक़ीदा रखते थे कि हम शरीयत मूसवी को मानते हैं और मुसलमानों के क़ुरआन मजीद में हमें हिदायत वाला कहा जा चुका है फिर हमें मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने की कोई ज़रूरत नहीं। इसी तरह मदीना मुनव्वरा में मुनाफ़क़ीन की एक बहुत बड़ी संख्या थी वे भी ख़ुद को मुसलमान कहती और नमाज़ें अदा करती थीं परन्तु अल्लाह तआला ने उन के बारे में फ़रमाया :وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ(अल-बक़र: 9) कि वे मोमिन नहीं। यहूद के बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमायाبَلْ لَّعَنَهُمُ اللهُ بِكُفْرِهِمْ (अलबक़रा 89) (अनुवाद अल्लाह तआला ने उन के कुफ़्र की वजह से उन पर लानत डाल रखी है।

अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद की एक आयत में फ़रमाया जिसका अनुवाद है कि "उस वक़्त को भी याद कर लो जब अल्लाह ने सब नबियों वाला मज़बूत वादा लिया था कि जो भी किताब और हिक्मत मैं तुम्हें दूं फिर तुम्हारे पास कोई ऐसा रसूल आए जो इस कलाम को पूरा करने वाला हो जो तुम्हारे पास है। لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ"तुम ज़रूर ही उस पर ईमान लाना और ज़रूर उस की मदद करना। (सूरत आले इमरान 3/82)फिर एक और आयत में अल्लाह तआला ने फ़रमाया :और जब हमने नबियों से इस बात का वादा लिया "वमिन्क"(हे मुहम्मद)तुझ से लिया और नूह अलैहिस्सालम से और इब्राहीम अलैहिस्सालम और मूसा अलैहिस्सलाम और ईसा इब्ने मरियम से। और हमने उन से पुख़्ता वादा लिया था।(अल्अहज़ाब 33/8)

"क़ुरआन करीम में दो वादों का वर्णन है एक बनी इस्राईल के वादे का एक और नबियों के वादे का जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से लिया गया था। (अल्अहज़ाब)उस का केन्द्रीय बिन्दु यह है कि जब तुम्हारे पास कोई रसूल आएं जो वही बातें कहें जो तुम कहते थे तो इक़रार करो कि हरगिज़ उनका इन्कार नहीं करोगे बल्कि तसदीक़ करोगे। यहां यह वज़ाहत ज़रूरी है कि नबियों की तरफ़ तो रसूल मबऊस नहीं होते ,उन की क़ौमों के पास रसूल आते हैं। अत: यही अभिप्राय है कि अपनी क़ौम को नसीहत करते रहें कि जब भी तुम्हारे पास कोई रसूल आए जो मेरा मुसद्दिक़ हो तो उस का इन्कार नहीं करना बल्कि ज़रूर उस की मदद करनी है।"

(उद्धरित तर्जमतुल क़ुरआन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे)

सारांक्ष यह है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा के माध्यम से उम्मत मुहम्मदिया से

यह वादा लिया गया था कि हे मुस्लमानों जब तुम में वह उम्मती नबी आए ,जो सूरह अल-जुम्अ: में वर्णित आख़रीन को उमिय्यीन से मिलाने वाला हो। तो उस पर ज़रूर ईमान लाना और उस की मदद करना। वह आने वाला फ़ारस की नस्ल में से एक शख़्स होगा दूसरा मसीह और महदी होगा। आप ने मुसलमानों को हुक्म दिया।

فَإِذَا رَأَيْتُمُوهُ فَبَايِعُوهُ وَلَوْ حَبْوًا عَلَى الثَّلْجِ فَإِنَّهُ خَلِيفَةُ اللهِ الْمَهْدِيُّ

(सुनन इब्न माजा किताबुल फ़ितन। बाब ख़ुरूजुल महदी)

हे मुसलमानो ! जब तुम उसे देखो तो इस की ज़रूर बैअत करना चाहे तुम्हें बर्फ़ के पहाड़ों पर घुटनों के बल ही जाना पड़े क्योंकि वह ख़ुदा का ख़लीफ़ा महदी होगा।

आज अहमदिया मुस्लिम जमाअत हर मुसलमान भाई से यह निवेदन करती है कि आएं और हज़रत मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदेश मान कर इमाम महदी के ख़लीफ़ा के हाथ पर बैअत करके जमाअत में शामिल हो जाएं।

सवाल: बहुत से ग़ैर अहमदी मौलवी सादा लौह मुसलमानों को ये कहते हैं कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम अपने दावा में सच्चे नहीं हैं लिहाज़ा उन पर ईमान लाने और जमाअत अहमदिया में शामिल होने का कोई फ़ायदा नहीं।

जवाब: इस सवाल का जवाब अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में चौदह सौ वर्ष पहले हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वर्णन में दे दिया है। एक आदमी जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान ला चुका था परन्तु अपने ईमान को छुपाते हुए और ग़ैरों को जाकर समझाता था एक बार वह मूसा अलैहिस्सलाम विरोधियों के पास गया और रहने लगा कि

وَإِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ وَإِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ إِنَّ اللهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ

(उल-मोमिन सूरतह नम्बर 40 आयत 29)

(अनुवाद: यदि वह झूठा है तो उस के झूठ का वबाल उसी पर पड़ेगा और यदि वह सच्चा है तो इस की कुछ (डराने वाली) भविष्यवाणियां तुम्हारे बारे में पूरी हो जाएँगी। अल्लाह सीमा से बढ़े हुए और बहुत झूठ बोलने वाले को कभी कामयाब नहीं करता।

क़ुरआन मजीद की आयत से अच्छी तरह समझा जा सकता है कि अल्लाह तआला जिसे भेजता है इस के झूठे होने का प्रश्न ही नहीं। अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद की सूरत अल्हाक्का की आयत 45 मैं फ़रमाया है अगर यह शख़्स हमारी तरफ़ झूठा इलहाम सम्बन्धित कर देता चाहे एक ही होता तो हम यक़ीनन उस के दाएं हाथ से पकड़ लेते और इस की रग जान काट देते और न ही झूठा अपने उद्देश्य में कामयाब होता है। हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ख़ुद फ़रमाते हैं कि

मैं अगर काज़िब हूँ कज़्ज़ाबों की देखूँगा सज़ा
पर अगर सादिक़ हूँ फिर क्या उज्र है रोज़े शुमार

अत: सवाल करने से निवेदन है कि वह ऊपर वर्णन की गई आयत की रोशनी में यह समझ लें हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम का इन्कार अवश्य अल्लाह तआला के निकट पूछे जाने योग्य है।

सहानुभूतिपूर्ण निवेदन

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक सहाबी हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि अल्लाह अन्हो थे। यह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुहर्रम राज़ मशहूर थे। वह कहते हैं कि लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से भलाई के बारे में पूछते और मैं बुराई के बारे में पूछता था,और हुज़ैफ़ा रज़ि अल्लाह अन्हो ने पूछा कि अगर मैं बुराई (उपद्रवों)का ज़माना पांऊं तो मैं

पृष्ठ 1 का शेष

ही है जो सबसे बड़ा और महान जिहाद है। यह वह तलवार है कि जो व्यक्ति इस पर पड़े गा उसका सिर काटा जाएगा और जिस पर यह पड़ेगी वह भी मारा जाएगा या इस्लाम की ग़ुलामी धारण कर के ज़िन्दा जावेद हो जाएगा। यदि तेरह सौ साल में भी सारी दुनिया में इस्लाम नहीं फैला तो इस का कारण यह नहीं कि यह तलवार कुंद थी बल्कि इसका बड़ा कारण यह था कि मुसलमानों ने इस तलवार से काम लेना छोड़ दिया। आज ख़ुदा ने फिर अहमदियत को यह तलवार देकर खड़ा किया है और फिर अपने दीन को दुनिया के समस्त धर्मों पर विजय करने का इरादा किया है। परन्तु कई नादान मुस्लमान अहमदियत पर हमला करते हुए कहते हैं कि अहमदी जिहाद के मानने वाले नहीं। उनकी मिसाल बिल्कुल ऐसी ही है जैसे कोई व्यक्ति गुलेलें लेकर क़िले पर हमला कर रहा हो तो यह देख कर कि गुलेलें से क़िला कब फ़तह हो सकता है कुछ और लोग तोपख़ाना लेकर आ जाऐं परन्तु गुलेलें चलाने वाला बजाए इसके कि उनका शुक्रिया अदा करे उन पर एतराज़ करना शुरू कर दे कि यह लोग गुलेलें क्यों नहीं चलाते। यह नादान भी अपनी नादानी के कारण से उस व्यक्ति को जिहाद का मुनकिर क़रार देते हैं जिस ने इस्लाम को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाया।"

(तफ़सीर कबीर, जल्द 6, पृष्ठ 512-513, प्रकाशित 2010 क़ादियान)

क्या करूँ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

قَالَ تَلْزَمُ جَمَاعَةَ الْمُسْلِمِيْنَ وَإِمَامَهُمْ، قُلْتُ فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُمْ جَمَاعَةٌ وَلَا إِمَامٌ، قَالَ فَاعْتَزِلْ تِلْكَ الْفِرَقَ كُلَّهَا وَلَوْ أَنْ تَعَضَّ بِأَصْلِ شَجَرَةٍ حَتّٰى يُدْرِكَكَ الْمَوْتُ وَأَنْتَ عَلٰى ذٰلِكَ

(बुख़ारी किताबुल फ़ितन बाब कैफ़ल अमरो इज़ा लम तकुन जमाअता)

अनुवाद: मुसलमानों की जमाअत और उनके इमाम से जुड़े रहने में (अर्थात हुज़ैफ़ा रज़ि अल्लाह ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि इन की जमाअत और इमाम न हो तब क्या करूँ ? हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जवाब में फ़रमाया तो ,मुसलमानों के इन समस्त फ़िर्क़ों से अलग रहना ,चाहे तुम्हें किसी दरख़्त की जड़ चबानी पड़े यहां तक कि इसी हालत में मौत आ जाए।

बिरादराने इस्लाम ! हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ी अल्लाह अन्हो के माध्यम से हर मुसलमान को यह हुक्म दिया है कि تَلْزَمُ جَمَاعَةَ الْمُسْلِمِيْنَ وَإِمَامَهُمْ अनुवाद तू मुसलमानों की जमाअत और उनके इमाम से जुड़ जा।

हे मुसलमान भाइयो ! आप बहुत क़िस्मत वाले हैं कि वर्तमान समय में अल्लाह तआला ने इमाम महदी अलैहिस्सलाम को भेजा। उनका ज़माना तो आप न पा सके परन्तु उन के ख़लीफ़ा इमाम हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब अय्यदहुल्लाह तआला मौजूद हैं। आप सय्यदना हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश के अनुसार उन से जुड़ जाएं और उन की जमाअत मुस्लमीन (अहमदिया मुस्लिम जमाअत)में शामिल हो जाएं। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हर साल लाखों ख़ुश नसीब इस जमाअत में शामिल होते चले जा रहे हैं और अल्लाह तआला और उस के रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आज्ञापालन वालों में शामिल होते चले जा रहे हैं। अल्लाह तआला हर मुसलमान को इस सौभाग्य को प्राप्त करने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन।

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणियां (सम्पादक)

अहमदियत के विरोधियों का अंजाम

आदरणीय पाठको! अब मैं अपने भाषण के द्वितीय भाग को लेता हूं और समय के अभाव के कारण कुछ सचेत करने वाली भविष्यवाणियों का वर्णन करूंगा अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में फ़रमाता है كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ

अल्लाह तआला ने यह लिख दिया है कि मैं और मेरे रसूल ही ग़ालिब आ कर रहेंगे (विजयी होंगे) और नबियों के दुश्मनों के बारे में फरमाया-

اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ कि मुजरिमों को हम सजा के बिना नहीं छोड़ते अपने इस अनादि कानून के अंतर्गत अल्लाह तआला ने सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जहां महान सफलताओं की अनंत खुशख़बरियां दीं वहां आपके दुश्मनों की तबाही, असफलता और नाकामी और अपमान एवं रुसवाइयों की भी ख़बर दी। अल्लाह तआला ने आपको इल्हाम करते हुए फरमाया- اِنِّيْ مُهِيْنٌ مَنْ اَرَادَ اِهَانَتَكَ (तज़्किरा-27) अर्थात जो तुझे अपमानित करने का इरादा करेगा मैं उस को अपमानित करूंगा। फिर फरमाया وَمُمَزِّقُ الْاَعْدَاءِ كُلَّ مُمَزَّقٍ (तज़्किरा-550) (मैं तेरे दुश्मनों को टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा।) इसी प्रकार फरमाया-

يَعْصِمُكَ اللّٰهُ مِنَ الْاَعْدَا
وَيَسْطُوْ بِكُلِّ مَنْ سَطَا

(अर्थात अल्लाह दुश्मनों से तुझे बचाएगा और हर एक व्यक्ति जो तुझ पर हमला करता है अल्लाह उस पर हमला करेगा) फिर फरमाया-اِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خَاطِئِيْنَ(अर्थात वे लोग जो फिरौन और हामान की का स्वभाव रखते हैं और उनके साथ के लोग जो उनका लश्कर हैं ये सब गलती पर हैं। फिर फरमाया- اِنِّيْ مَعَ الْاَفْوَاجِ اٰتِيْكَ بَغْتَةً मैं समस्त फौजों के साथ अर्थात फरिश्तों के साथ निशानों के दिखलाने के लिए तेरे पास आऊंगा। (तज़्किरा पृष्ठ 494)

आदरणीय पाठको! इन इलाकों में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को एक लंबे समय पूर्व यह सूचना दे दी थी कि आपका विरोध होगा और आप की जमाअत का भी विरोध होगा। विरोधी आपके मिशन को तबाह करने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगाएंगे। आपको बताया गया कि इस विरोध के कारण लोग भी सामने आएंगे और जमाअतें भी मुकाबले पर आएंगी और सरकारें भी टक्कर लेने का प्रयत्न करेंगे लेकिन ख़ुदा तआला जो परोक्ष का ज्ञाता है और सर्वशक्तिमान है उन्हें अपमानित करेगा और वह शीघ्र आपस में लड़ कर टुकड़े टुकड़े हो जाएंगे। इसलिए अहमदियत के इतिहास का एक एक दिन इस बात का गवाह है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिसल्लाम से इन भविष्यवाणियों के अनुसार ही व्यवहार किया। निसन्देह शत्रुओं ने एड़ी चोटी का ज़ोर लगाया। हर प्रकार चालबाज़ियों से काम लिया लेकिन अल्लाह तआला ने उनकी चालबाज़ियों को हर प्रकार से उन्हीं पर उल्टा दिया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिसल्लाम और आप की जमाअत को हर मैदान में सफल किया। अत: देख लीजिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सबसे बड़े शत्रु और सबसे बड़े इन्कार करने वाले मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी का क्या परिणाम हुआ जिसने कहा था कि मैंने ही इस व्यक्ति को उठाया है और अब मैं ही इसे गिराऊंगा। लेकिन आज सारी दुनिया गवाह है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप की जमाअत को पूरी दुनिया में कैसे महानता और बुलंदी प्रदान की है और मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी को किस प्रकार अपमानित किया। आज पूरे बटाला में किसी से जाकर मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी के बारे में पूछ लो कोई उसका नाम भी नहीं जानता, कोई नहीं बता पाएगा कि उसका घर कहां था और वह कहां दफन हुआ लेकिन सैयदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पैगाम आज सारी दुनिया में डंके की चोट पर गूंज रहा है और सारी दुनिया में आप पर जान कुर्बान करने वाले करोड़ों मौजूद हैं। इसी प्रकार मौलवी सनाउल्लाह अमृतसरी जो अपने आप को क़ादियान का विजेता कहा करता था, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिसल्लाम की मुबाहिला की दावत से भागते हुए निरंतर लिखता था कि यह कोई सच्चाई की कसौटी नहीं है कि सच्चे के जीवन में झूठा मरे बल्कि मुस्लेमा कज्ज़ाब का उदाहरण देकर कहता था कि क़ुरआन करीम से सिद्ध है कि झूठे को लंबी मोहलत दी जाती है। अत: उसी की दलील के अनुसार उसको लंबी आयु दी गई और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिसल्लाम के देहांत पर उसने बड़ी हसरत से कहा था कि काश अब मिर्ज़ा साहब की समस्त पुस्तकों को जमा करके जला दिया जाए ताकि भविष्य में उनका कोई नाम लेने वाला भी न बचे। उसका स्वयं अपना परिणाम यह हुआ के 1947 ई के दंगों में उसी की उपस्थिति में उसके इकलौते बेटे को बुरी तरह मार दिया गया और उसके अपने पुस्तकालय को जो उसे अपनी जान से भी अधिक प्रिय था उसकी आंखों के सामने जलाकर राख कर दिया गया और असफलता और नाकामी के साथ बड़ी हसरत से दुनिया से विदा हुआ और अहमियत का बाल भी बांका न कर सका।

आदरणीय पाठको! इस अवसर पर मैं संक्षेप से काम लेते हुए कुछ ऐसे दुश्मनों के केवल नामों का वर्णन करना चाहता हूं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तबाही के इच्छुक थे। कुछ ने आपके विरुद्ध बद्दुआएं कीं और कुछ मुबाहिला के परिणाम स्वरुप तबाह हुए उदाहरणतया मौलवी नज़ीर हुसैन देहलवी, मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर कसूरी, मौलवी रशीद अहमद गंगोही, शाह दीन लुधियानवी, अमेरिका का जान एलेग्ज़न्डर डोई, मौलवी अब्दुल मजीद देहलवी, सादुल्लाह लुधियानवी, लुधियाना के ही मौलवी मुहम्मद, मौलवी अब्दुल अज़ीज़ और मौलवी अब्दुल्लाह। यह सभी मुबाहला के परिणाम स्वरुप भयानक मौत का शिकार हुए। इसी प्रकार मोहिउद्दीन लखूखे वाले, नूर मुहम्मद भिड़ीचढ़, चिराग दीन जमूनी, मौलवी ग़ुलाम रसूल अमृतसरी, इस्माइल अलीगढ़ी, मौलवी मुहम्मद हुसैन भीं वाले इन समस्त ने हुज़ूर अलैहिस्सलाम के विरुद्ध बद्दुआएं कीं और अधिकतर प्लेग के अज़ाब से तबाह हुए। (विस्तार के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तक हकीकतुल वह्यी का अध्ययन करें)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, अल्लाह तआला के वादों के पूरा होने पर धन्यवाद करते हुए फरमाते हैं-

गढ़े में तूने सब दुश्मन उतारे
हमारे कर दिए ऊंचे मीनारे
मुक़ाबिल पर मेरे यह लोग हारे
कहां मरते थे पर तूने ही मारे
शरीरों पर पड़े उनके शरारे
न उनसे रुक सके मकसद हमारे
उन्हें मातम हमारे घर में शादी
फ़ सुभहानल्लज़ी अख्ज़ल अआदि

आदरणीय पाठको! यह वे शत्रु थे जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जीवन में अल्लाह तआला के वादों के अनुसार अपमान और रुसवाई के गड्डे में गिराए गए जबकि आप के बाद भी बहुत से फितने उठे उदाहरण स्वरूप सन 1934 में मज्लिस-ए-अहरार उठी और अहरार के संस्थापक सैयद अताउल्लाह शाह बुखारी जिसने अहमदियों को मसीह की भेड़ें कहते हुए बड़े तिरस्कार से कहा था कि अहमदियत को मिटाने के लिए बहुत से हाथ उठे लेकिन ख़ुदा को यही मंजूर था कि मेरे हाथ से तबाह और बर्बाद हो और फिर ख़ुदा तआला की तकदीर के अनुसार मज्लिस अहरार और उसका संस्थापक का अत्यंत दर्दनाक परिणाम हुआ और दुनिया उसकी गवाह है। सन 1947 में पड़ोसी देश के प्रधानमंत्री जुल्फिक़ार अली भुट्टो जिसने गंदी उलेमा को प्रसन्न करने के लिए पाकिस्तान की क़ौमी असेंबली में अहमदियों को गैर मुस्लिम अल्पसंख्यक क़रार देकर यह समझ लिया था कि अब मेरी कुर्सी को कोई हिला न सकेगा लेकिन كلبٌ يموت على كلبٍ के पात्र उस व्यक्ति को दुनिया की कोई शक्ति हसरतनाक अल्लाह के अज़ाब से बचा न सकी।

एक फौजी डिक्टेटर जो अहमदियत को कैंसर के नाम से नामित करता था। उसने अहमदियों का जीना मुश्किल करने के लिए और सीधे तौर पर खिलाफत अहमदिया पर हाथ डालने के लिए एक अत्यंत अत्याचार पूर्ण आर्डिनेंस जारी किया लेकिन अल्लाह तआला ने चमत्कारिक रूप से हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबेअ को बड़ी शान के साथ सुरक्षा पूर्वक लंदन प्रवास करने का सामर्थ्य प्रदान किया और दूसरी ओर समय का फिरऔन मोबाहिला के नतीजे में अपने पूरे लश्कर के साथ हैरान कर देने वाली हवाई घटना का शिकार होकर आसमान में ऐसा बिखरा कि उसके वजूद का कोई हिस्सा भी सुरक्षित नहीं पाया गया। सच तो यही है कि-

"अंजाम यही होता आया फिरौनों का हामानों का।"

सैय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं यह उन लोगों की ग़लती है और अत्यंत दुर्भाग्य है कि मेरी तबाही चाहते हैं। मैं वह वृक्ष हूं जिसको वास्तविक मालिक (अर्थात अल्लाह तआला) ने अपने हाथ से लगाया

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 17 December 2020 Issue No.51

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

है जो व्यक्ति मुझे काटना चाहता है उसका परिणाम सिवाय इसके कुछ नहीं कि वह कारून और यहूदा इस्कर्यूती और अबू जहल के भाग्य से कुछ हिस्सा लेना चाहता है। हे लोगो! तुम निसन्देह समझ लो कि मेरे साथ वह हाथ है जो आखिर समय तक मुझसे वफा करेगा। अगर तुम्हारे मर्द और तुम्हारी औरतें और तुम्हारे जवान और तुम्हारे बूढ़े और तुम्हारे छोटे और तुम्हारे बड़े सब मिलकर मेरे तबाह करने के लिए दुआएं करें, यहां तक के सजदे करते-करते नाक गल जाएं और हाथ घिस जाएं तब भी ख़ुदा हरगिज़ तुम्हारी दुआ नहीं सुनेगा और नहीं रुकेगा जब तक वह अपने काम को पूरा न कर ले।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 17, ज़मीमा तोहफा गोलड़विया पृष्ठ 49)

सामाजिक और राजनैतिक परिवर्तन और इस्लाम की वैश्विक विजय की भविष्यवाणी

आदरणीय पाठको सचेत करने वाली भविष्यवाणियों के संबंध में अब अंत में मैं इस महान भविष्यवाणियों का एक लघु समीक्षा आपके समक्ष प्रस्तुत करना चाहता हूं जो दुनिया के सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों से संबंध रखती है और जिनके परिणाम स्वरुप दुनिया का नक्शा ही बदल गया। अत: इस समय तक दुनिया दो विश्व युद्धों से दो चार हो चुकी है। दोनों विश्व युद्धों के बारे में जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने कई वर्ष पूर्व भविष्यवाणी की थी। अत: 1940 ई में पश्चिमी शक्तियों के मुकाबले किसी पूर्वी शक्ति की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। अल्लाह तआला ने आप को इल्हाम किया कि

"एक पूर्वी शक्ति और कोरिया की नाज़ुक हालत"।

अत: 1914 में जब प्रथम विश्व युद्ध हुआ तो भविष्यवाणी के अनुसार संसार ने देखा कि जापान एक पूर्वी शक्ति की हैसियत से पश्चिमी शक्तियों के मुकाबले पर उभरा और कोरिया जापान के अधीन आ गया जबकि पहले वह रूस के कब्जे में था और इसी प्रकार आप की भविष्यवाणी के अनुसार दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे अधिक समर्थ बादशाह ज़ार-ए-रूस अचानक अपने शाही ख़ानदान समेत अत्यंत अपमान के साथ सरकार से बेदखल कर दिया गया और उसको उसके शाही ख़ानदान समेत विभिन्न स्थानों पर कैदी बनाकर ऐसी यातनाएं दी गईं जिनको सुनकर आज भी शरीर कांप जाता है। और अंतत: ज़ार और उसके ख़ानदान को अपमान के साथ मार दिया गया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का बयान पूर्णत: पूरा हुआ कि- "ज़ार भी होगा तो होगा उस घड़ी बाहाले ज़ार"

फिर दूसरे विश्व युद्ध में आप की भविष्यवाणी के अनुसार ऐसी वैश्विक तबाही आई जो पहले विश्व युद्ध की तबाही से अधिक, व्यापक थी और भयानक थी। इस युद्ध में जापान की पराजय हुई और जापान के शहर हिरोशिमा और नागासाकी पर एटमी हमला करके उनके अस्तित्व को दुनिया के नक्शे से लगभग मिटा दिया गया। इधर जापान को पराजय हुई तो चीन एक पूर्वी शक्ति की हैसियत से दुनिया में उभर कर आया। यह समस्त परिवर्तन वास्तव में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणियों के अनुसार प्रकट हुए हैं। आज दुनिया 2 ब्लॉकों में बट चुकी है। एक तरफ अमेरिका और उसके साथी हैं और दूसरी ओर रूस और उसके साथी हैं। इन दोनों विरोधी गिरोहों की तबाही भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणियों के अनुसार तीसरे विश्वयुद्ध के रूप में सिर पर मंडला रही है। अत: आप ने दुनिया को होशियार करते हुए फरमाया है कि

"दुनिया में एक क़यामत बरपा होगी वह प्रथम क़यामत होगी और समस्त बादशाह आपस में एक दूसरे पर चढ़ाई करेंगे और ऐसा ख़ून बहेगा कि ज़मीन ख़ून से भर जाएगी और प्रत्येक बादशाह की जनता भी आपस में भयानक लड़ाई करेगी, एक वैश्विक तबाही आएगी और इन तमाम घटनाओं का केंद्र सीरिया देश होगा।"(तज़किरा पृष्ठ 798)

इसी प्रकार आप तीसरे विश्व युद्ध की भयानक तबाही की ख़बर देते हुए फरमाते हैं- "हे यूरोप तू भी अमन में नहीं और हे एशिया तू भी सुरक्षित नहीं और हे द्वीपों के रहने वालो! कोई बनावटी ख़ुदा तुम्हारी सहायता नहीं करेगा, मैं शहरों को गिरते देखता हूं और आबादियों को वीरान पाता हूं। वह ख़ुदा एक लंबे समय तक खामोश रहा, उसकी आंखों के सामने बुरे से बुरे काम किए गए वह चुप रहा, परन्तु अब वह भयानक रौब के साथ अपना चेहरा दिखलाएगा जिसके कान सुनने के हो सुने। (रूहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 229)

आदरणीय पाठकगण! आज जो दुनिया के हालात हैं और अरब स्प्रिंग के परिणाम स्वरुप जो राजनीतिक परिवर्तन उभर कर दुनिया के सामने आ रहे हैं और जिस प्रकार पश्चिमी शक्तियों ने अपने व्यक्तिगत हितों के लिए इन देशों में हालात को बुरे से बुरा बना दिया है जिसके परिणाम स्वरुप दुनिया फिर से एक तीसरे विश्व युद्ध के द्वार पर खड़ी है। आज फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इल्हाम कि "एक पूर्वी शक्ति और कोरिया की नाज़ुक हालत" दोबारा इन हालात में चरितार्थ हो रहा है। विशेष रुप से कोरिया और अमेरिका के वर्तमान झगड़े के बारे में तो हज़रत खलीफ़तुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने स्पष्ट शब्दों में फरमा दिया है कि केवल मिडिल ईस्ट या अरब देशों का ही मामला नहीं है कि जहां से युद्ध के शोले भड़क सकते हैं, अमेरिका और कोरिया का भी तनाव हर आने वाले दिन में बढ़ रहा है और दुनिया के हालात पर नज़र रखने वाले और विचार करने वाले इस बात का स्पष्ट रूप से इज़हार कर रहे हैं कि अमेरिका का मामूली सा भी हथियारों का प्रयोग या शक्ति के प्रदर्शन का व्यवहार या कोरिया की तरफ से हथियारों का प्रयोग, चाहे वह बिना नुकसान पहुंचाए डराने के लिए ही हो, इस हिस्से में भयानक जंग पर आधारित होगा। (ख़ुत्बा जुमा 30 जून 2017 ई)

अत: आज नि:संदेह दुनिया एक भयानक तबाही के द्वार पर खड़ी है और कभी भी कुछ भी हो सकता है। लेकिन यह भी अल्लाह तआला का वादा और भविष्यवाणी है कि तृतीय विश्व युद्ध का अन्त इस्लाम की वैश्विक विजय के आरंभ से होगा। इस विषय में हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह फरमाते हैं

इस्लाम का सूरज अपनी पूरी चमक के साथ उदय होगा और दुनिया को प्रकाशित करेगा लेकिन इससे पहले कि यह हो ज़रूरी है कि दुनिया एक वैश्विक तबाही में से गुज़रे, एक ऐसी खूनी तबाही जो मानव जाति को झिंझोड़ कर रख देगी। लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि यह एक इंज़ारी (सचेत करने वाली) भविष्यवाणी है और इंज़ारी भविष्यवाणियां तौबा करने से विलंबित की जा सकती हैं, बल्कि टल भी सकती हैं। अगर इंसान अपने रब्ब की ओर लौट आए और क्षमा मांगे और अपने हालात को ठीक कर ले तो वह अब भी ख़ुदा के क्रोध से बच सकता है। (ख़ुत्बाते नासिर जिल्द 1 पृष्ठ 930)

अब अंत में मैं हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला का एक इक्तेबास प्रस्तुत करके अपने भाषण को समाप्त करूँगा। आप फरमाते हैं-

"हम सौभाग्यशाली हैं कि हमने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेश के अनुसार आने वाले मसीह व महदी को मान लिया है जिससे अब दुनिया का अमन और सलामती जुड़ी हुई है और यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बताए हुए तरीके के अनुसार पालन करने से होगा। दुनिया अगर युद्धों की तबाही और बर्बादी से बच सकती है तो केवल एक ही उपाय से बच सकती है और वह है हर अहमदी की एक दर्द के साथ इन तबाहियों से इंसानियत को बचाने के लिए दुआ है।

हुज़ूर फरमाते हैं कि आज हर अहमदी का कर्तव्य है कि एक दर्द के साथ इंसानियत को तबाही से बचाने के लिए भी दुआ करे। जंगों के टलने के लिए भी दुआ करे, हम इस बात पर खुश नहीं हैं कि दुनिया का एक हिस्सा तबाह हो और फिर बाकी दुनिया को अक्ल आए और वह ख़ुदा तआला की ओर झुके और आने वाले को माने बल्कि हम तो इस बात पर खुश हैं और कोशिश करते हैं और दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला किसी को भी उसके बुरे कर्मों के कारण तबाही में ना डाले और दुनिया को अक्ल दे कि वह बुरे अंजाम से बचे। अल्लाह तआला करे कि हमारी दुआओं से उनको अक्ल भी आ जाए और अल्लाह तआला उनको तबाही के गड्ढे में गिरने से भी बचा ले। (ख़ुत्बा जुम्अ: 30 जून 2017)

साफ दिल को कसरते एजाज़ की हाजत नहीं,
इक निशां काफी है गर दिल में हो ख़ौफ़े किरदार।

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad